Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

सामाइयमाहु तस्स जं,
जो अप्पाण भए ण दंसए।

जो भय से विचलित नहीं होता, उस साधक के सामायिक होता है।

• नई दिल्ली • वर्ष 24 • अंक 17 • 30 जनवरी - 5 फरवरी 2023 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 28-01-2023 • पेज : 12 • ₹ 10

ज्ञान के क्षेत्र में विकास के लिए बुद्धि और सम्यक् परिश्रम आवश्यक : आचार्यश्री महाश्रमण

हेमजी का तला, २३ जनवरी, २०२३

जन-जन को समता का संदेश देने वाले आचार्यश्री महाश्रमण जी लगभग १२ किलोमीटर का विहार कर हेमजी का तला के राजकीय विद्यालय में पधारे। पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए जगतारक ने फरमाया कि आदमी सुखी रहना चाहता है। सामान्यतया कोई भी प्राणी दुखी रहना नहीं चाहता। पर रास्ता कौन सा लेते हैं?

शास्त्र में कहा गया है कि संसार में सुखी बनने के लिए अपने आपको तपाओ। सुकुमारता को छोड़ो। परिश्रमी और कठोर जीवन जीने का आदमी को अभ्यास होता है, तो सुखी होने का यह एक उपाय है। आलस्य मनुष्यों का महाशत्रु है और वह शरीर में रहता है।

परिश्रम के समान कोई भाई नहीं है, जिसको प्राप्त कर आदमी अवसाद को प्राप्त नहीं होता। उद्यम करने से कार्य सिद्धि प्राप्त हो सकती है। हम सम्यक् परिश्रम करें। यह एक प्रसंग से समझाया कि विद्यार्थी में बुद्धि हो और परिश्रम हो तो वह ज्ञान के क्षेत्र में विकास कर सकता है।

लक्ष्य केवल अंक पाने का न हो, ज्ञान भी अच्छा हो। ज्ञान का दिया जले, परिश्रमशीलता खास बात है।

परिश्रम भी निरवद्य और आध्यात्मिक हो। गलत काम करने की अपेक्षा नींद लेना अच्छा है। करें तो बढ़िया परिश्रम करें। कामनाओं को छोड़ें। अवांछनीय कामनाएँ न हों। विद्यार्थी के पाँच लक्षण बताए गए हैं–कौवे की तरह चेष्टा, बगुले जैसी एकाग्रता, कुत्ते की सी नींद, समय पर काम और कामनाएँ कम हों। घृणा-ईर्ष्या न करें।

दूसरे को सुखी देखकर दुखी न बनें। दूसरे को दुखी देखकर सुखी न हो। सद्विचार और आचार बढ़िया हो। ईमानदारी हो। गुस्सा-घमंड व नशा नहीं करना चाहिए। जीवन में संयम होता है तो जीवन सुखी बन सकता है। आदमी सुखी होने का रास्ता लेकर उस रास्ते पर अच्छी तरह चले। रास्ता दुःख का ले लिया तो प्राणी दुखी बन सकता है। दुखी-सुखी बनना हमारे हाथ में है। विद्यार्थियों में अच्छे संस्कार हों तो जीवन अच्छा बन सकता है।

पूज्यप्रवर ने नैतिकता, सद्भावना और नशामुक्ति को समझाकर उनके संकल्प स्थानीय लोगों एवं विद्यार्थियों को स्वीकार करवाए। पूज्यप्रवर के स्वागत में स्थानीय सरपंच भंवरलाल गोदारा, पारसमल लीडर (प्रिंसिपल) ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

मुनि रजनीश कुमार जी ने बायतू की ओर से पूज्यप्रवर का स्वागत अभिनंदन किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

आदमी कद या पद से बड़ा नहीं बनता अपितु विचार से बड़ा बनता है : आचार्यश्री महाश्रमण

बायतू भीमजी, २४ जनवरी, २०२३

धर्म चक्रवर्ती आचार्यश्री महाश्रमण जी प्रातः बायतू भीमजी के महात्मा गांधी विद्यालय में पधारे। जनमेदिनी को पावन पाथेय प्रदान करते हुए परम पावन ने फरमाया कि आदमी जीवन जीता है। जीवन जीना एक सामान्य बात है। सभी प्राणी जीवन जीते हैं।

बड़ी बात कौन सी है, जो वैशिष्ट्य को प्राप्त करे? आदमी जीवन कैसा जी रहा है? सद्गुण संपन्न जीवन जीता है तो कुछ विशेष बात हो सकती है। सज्जन आदमी परनिंदा नहीं करता है। इस संदर्भ में वाणी का संयम रखना चाहिए।

जो बातें तुमने सुनी हैं, हो सकता है वो सही हो या अंतर भी हो। उचित जगह पर दोष बताओ और वो भी पक्की बात हो, अयथार्थ न हो। यह एक प्रसंग से समझाया कि बात बढ़ते-बढ़ते कैसे बढ़ जाती है। दूसरे के गुण होते हैं, थोड़े गुण का भी बखान कर दें। दूसरा कोई ऋद्धि संपन्न बन गया तो उसमें भी संतोष हो न कि ईर्ष्या। दूसरों में तकलीफ आती है तो खिन्न हो जाता हैं अपनी बढ़ाई अपने मुख से नहीं करता है। आत्मश्लाघा नहीं करनी चाहिए।

सज्जन आदमी नीति के रास्ते का भी उल्लंघन नहीं करता। जो उचित है वो बात करता है। कोई अप्रिय बात कह दे तो वह असहिष्णु नहीं बनता, धीरता को नहीं छोड़ता, गुस्सा नहीं करता। आदमी कद या पद से बड़ा नहीं बनता, वह विचार से बड़ा बनता है। दया-अनुकंपा जीवन में है तो सज्जनता है। हमारे में प्रमोद भावना हो। अनुकंपा की भावना हो तो हमारी आत्मा कल्याण की दिशा में आगे बढ़ सकती है।

(शेष पृष्ठ २ पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
30 जनवरी - 5 फरवरी, 2023

✦ *जिस व्यक्ति में कार्य करने का उत्साह और साहस होता है, वह अवस्था से चाहे वृद्ध भी हो, वस्तुतः वह युवक ही है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

मोक्ष प्राप्ति में सहायिका का कार्य करती है समता की साधना : आचार्यश्री महाश्रमण

ढाणी, बाड़मेर, २० जनवरी, २०२३

दिव्य शक्ति के भंडार आचार्यश्री महाश्रमण जी बायतू की ओर अग्रसर हैं। प्रातः लगभग १२ किलोमीटर का विहार कर दिव्य पुरुष ढाणी के राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में पधारे। पूज्यप्रवर ने मंगल पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि समता की साधना सुख की एक जननी है। समता धर्म है। अनुकूलता-प्रतिकूलता की स्थितियाँ जीवन में आ सकती हैं। समता सेवी, समता साधक पुरुष द्वंद्वात्मक परिस्थितियों में सुख-शांति में रह सकता है।

लाभ-अलाभ, सुख-दुःख, जीवन-मरण, निंदा-प्रशंसा, मान-अपमान—इन सबमें समता रखनी चाहिए। साधु तो समताधर्मी, समता साधक, समता-सेवी होना चाहिए। साधु को समतारूपी अमृत पीने का प्रयास करना चाहिए। साधु महान पुरुष होता है। वीर-पुरुष महान पथ पर प्रणत होते हैं। राग-द्वेष से मुक्त रहते हैं।

आत्मस्थ रहने के लिए समता की साधना और अपनी चेतना में रहना निर्विचारता की स्थिति रहे। आत्मस्थ रहने के लिए हमें मध्यस्थ रहना होगा। जो समता में रहता है, वो मध्यस्थ है। समता परम की ओर ले जाने वाली, मोक्ष को प्राप्त कराने में सहायिका बन सकती है। साधु क्षमामूर्ति, त्यागमूर्ति और अहिंसा मूर्ति हो।

त्याग के महत्त्व को एक प्रसंग से समझाया कि दान के साथ अहंकार नहीं करना चाहिए। आदमी काम करे पर नाम की लालसा न करे। हम समता में आगे बढ़ें।

आज माघ कृष्णा त्रयोदशी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी का चयन दिवस रहा है। गुरुदेव तुलसी ने ५१ वर्ष पूर्व गंगाशहर में मनोनीत किया था। ५० वर्ष चयन के पूर्ण होने पर लाडनूं में उनका अमृत महोत्सव मनाया गया। उन्होंने तीन आचार्यों के शासनकाल में कार्य किया। उनमें साहित्यिक विशेषता थी और साथ ही कविता भी लिखती थी। उन्हें संस्कृत का भी विशेष ज्ञान था। लंबे समय तक साध्वी समाज का चित्त-समाधि पहुँचाने का कार्य किया।

जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित व शासन गौरव साध्वी कल्पलता जी द्वारा संपादित 'शासन माता ग्रंथ' पूज्यप्रवर के करकमलों में अर्पित किया गया। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया। साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी, साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी एवं मुख्यमुनि महावीर कुमार जी ने भी शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी के बारे में अपने उद्गार-श्रद्धांजलि अर्पित की।

पूज्यप्रवर ने साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी के बारे में फरमाया कि तेरापंथ द्विशताब्दी महोत्सव के अवसर पर गुरुदेव तुलसी ने उनको दीक्षित किया था। दीक्षा के ११ वर्ष बाद ही उन्हें साध्वीप्रमुखा पद पर स्थापित किया गया। बाद में महाश्रमणी व संघ-महानिर्देशिका पद पर भी गुरुदेव ने प्रतिष्ठित किया था। साध्वी कल्पलता जी उनके ज्यादा निकट रही थी। उन्होंने भी अच्छा कार्य किया है। साधना के लिए जैविभा बढ़िया स्थान है। शिक्षा, अध्ययन व शोध एवं स्वास्थ्य के लिए भी बढ़िया स्थान है। साध्वी कल्पलता जी को भी साधुवाद दिया जा रहा है।

आज चतुर्दशी भी है। पूज्यप्रवर ने हाजरी का वाचन करते हुए प्रेरणाएँ प्रदान कीं। लेखपत्र का वाचन भी किया गया।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि मोक्ष मार्ग के दो रास्ते हैं—संयम और तप।

फलसूंडवासियों पर बरसी गुरुकृपा, एक दिवस पूर्व युगप्रधान का पदार्पण

गृहस्थ भी जीवन में रखे नैतिकता : आचार्यश्री महाश्रमण

मानसर, १७ जनवरी, २०२३

मंगलवार का दिन फलसूंडवासियों के लिए मंगल ही मंगल लेकर आया। एकादशम आचार्यश्री महाश्रमण जी पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार १८ तारीख को फलसूंड पदार्पण संभावित था परंतु फलसूंडवासियों के भक्ति भाव भरे निवेदन पर एक दिन पूर्व ही मुख्य मुनि महावीर कुमार जी के पैतृक गाँव आचार्यप्रवर फलसूंड पधारे। आचार्यप्रवर ने रात्रि प्रवास मुख्य मुनिश्री के संसारपक्षीय पिताजी सवाईचंदजी कोचर के निवास पर किया।

भारतीय ऋषि परंपरा के महान संत आचार्यश्री महाश्रमण जी प्रातः जाखल से लगभग १२ किलोमीटर का विहार कर मानसर के राजकीय विद्यालय में पधारे। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में परम पावन ने प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि जैन दर्शन में १८ पाप बताए गए हैं।

प्राणातिपात, मृषावाद आदि अठारह पाप हैं।

इनमें तीसरा पाप है—अदत्तादान यानी अदत्त-आदान। जो वस्तु नहीं दी गई है, उसे ले लेना। हड़पने की भावना से दूसरों की चीज ले लेना, अदत्तादान है। यह चोरी है, पाप है। साधु के तो सर्व अदत्तादान विरमण महाव्रत होता है। गृहस्थ भी नैतिकता, ईमानदारी का प्रयत्न रखे। चोरी की भावना से लेना अदत्तादान की कोटि में आ सकता है।

गृहस्थ में संयम का भाव आ जाता है, तो वे बहुत ऊँचे हो जाते हैं कुछ अंशों में साधु जैसे हो जाते हैं। संतों के प्रवचन देने से गृहस्थों के जीवन में परिष्कृत की भावना आ सकती है। साधु ज्ञान दे सकता है। दुःख में थोड़ी चित्त समाधि दे सकते हैं। मंत्र-जाप बता सकते हैं। अध्यात्म का दान या अध्यात्म रूप में साधु गृहस्थों की सेवा कर सकता है।

साधु के जो त्याग हैं, वो बड़ी बात हैं। वो त्यागी है, त्यागी को भिक्षा लेने का अधिकार है। गृहस्थ के लिए माँगना शर्म की बात हो सकती है। जो काम आम आदमी नहीं कर सकता वो साधु कर सकता है। माँगना भी परिषह है, यह एक प्रसंग से समझाया कि सफेद बाल सिर में आता है, वो दूत के समान है, अब आत्म-कल्याण में लगना चाहिए।

साधु घर में आए और गृहस्थ दान देने से बचे तो वह अवांछनीय बात हो सकती है। गृहस्थ चोरी करता है, उसके दो कारण हो सकते हैं—एक अभाव और दूसरा संग्रह की भावना। चोरी करने की अपेक्षा तो माँगना ठीक है। चोरी करने से गृहस्थों को ज्यादा से ज्यादा बचने का प्रयास करना चाहिए।

आदमी कद या पद से बड़ा नहीं बनता...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

आज महात्मा गांधी विद्यालय में आए हैं। बायतु का मर्यादा महोत्सव संबंधी प्रवेश तो कल है। विद्यालय के विद्यार्थियों में अच्छे संस्कार आते रहें।

अमेरिका से समागत समणी नीतिप्रज्ञा जी, समणी मलयप्रज्ञा जी ने अपनी भावना पूज्यप्रवर के श्रीचरणों में प्रस्तुत की। पूज्यप्रवर ने दोनों समणी जी को आशीर्वचन फरमाया।

पूज्यप्रवर के स्वागत में राधा बालड़, जसोदा छाजेड़, बालड़ परिवार, तन्मय छाजेड़, सोनू छाजेड़, रवीना लोढ़ा, भंवरलाल बालड़, अत्तरसिंह यादव ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। कन्या मंडल ने गीत के माध्यम से प्रस्तुति दी।

मुनि कीर्तिकुमार जी ने समझाया कि हमारी सोच साकारात्मक हो। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

उपलब्धियों भरा बना प्रवास

लुधियाना।

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी स्वामी के लुधियाना प्रवास के दौरान श्रावक-श्राविकाओं में अभिनव धार्मिक जागरणा के अंतर्गत उपासक-उपासिकाएँ, प्रेक्षा प्रशिक्षक-प्रशिक्षिकाएँ एवं जैन संस्कारकों के प्रशिक्षण एवं निर्माण का व्यवस्थित क्रम बना।

उपासक-उपासिकाओं के प्रशिक्षण का क्रम उपासक श्रेणी के राष्ट्रीय संयोजक सूर्यप्रकाश सामसुखा की देख-रेख में चला। मुनिश्री ने तीन वंदना—परमेष्ठी वंदना, पंचपद वंदना और अर्हम वंदना एवं पच्चीस बोल की मौखिक परीक्षा ली। जैन संस्कारकों के लिए युवक परिषद के राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य पवन नौलखा को दायित्व दिया गया। उन्होंने जैन संस्कारक विमल गुनेचा से संपर्क कर कार्यशाला का आयोजन किया।

प्रेक्षा प्रशिक्षक-प्रशिक्षिकाओं का दायित्व उपासक विशाल दुगड़ को दिया गया। इसके साथ ही प्रत्येक रविवार नमस्कार महामंत्र का जाप भी अनुक्रम से सभी घरों में आडंबर रहित सामायिक सहित हो रहा है। इसका दायित्व महिला मंडल की बहनों को दिया गया, जिसमें उपासिका विनोद देवी सुराणा, महिला मंडल अध्यक्षा इंदु देवी सेठिया एवं मंत्री श्रद्धा देवी दुगड़ हैं।

ज्ञानशालाओं को अपने-अपने क्षेत्र में व्यवस्थित चलाने की प्रेरणा देते हुए ज्ञानशाला का संयोजक चंद्रमोहन जैन को बताया गया, जिससे हर क्षेत्र में व्यवस्थित ज्ञानशाला का आयोजन समय पर हो सके।

अणुव्रत समिति का व्यवस्थित विधिवत गठन एवं शपथ का कार्यक्रम हुआ। मुनिश्री ने कहा कि अणुव्रत आंदोलन को गतिमान बनाए रखना है यह गुरुदेव तुलसी का अनुपमेय अवदान है। अध्यक्ष राकेश गर्ग, मंत्री राजकुमार बुच्चा आदि पूरी टीम को डॉक्टर विश्व मोहन ने शपथ दिलाई। तेयुप के राष्ट्रीय प्रभारी पवन नौलखा ने तेरापंथ टास्क फोर्स की जानकारी दी एवं नवीन भंडारी ने सभी को प्रयोग करने की विधि बतलाई। प्रेक्षावाहिनी की प्रभारी मीनाक्षी ने सभी को प्रेक्षाध्यान करवाया। मुनि कमल कुमार जी स्वामी ने अर्थ सहित अर्हत वंदना की मौखिक परीक्षा भी ली।

ज्ञानशाला के विविध आयोजन

भुवनेश्वर

तेरापंथ भवन में सभा अध्यक्ष बच्छराज बेताला, तेयुप के अध्यक्ष विवेक बेताला, महिला मंडल की अध्यक्षा मधु गिडिया, ज्ञानशाला संयोजिका नयनतारा सुखाणी, मुख्य प्रशिक्षिका संतोष सेठिया की उपस्थिति में शिशु संस्कार बोध के प्रश्न पत्र खोले गए।

नमस्कार महामंत्र के साथ परीक्षा प्रारंभ हुई, बड़े ही उत्साह के साथ भाग-१-५ तक २५ बच्चों ने परीक्षा दी। समाज के गणमान्य सदस्य नरपत बेताला, जीतेंद्र बैद, ललिता सुराणा, सपना बैद का भी अनवरत सहयोग रहा। सभी प्रशिक्षिकाओं की उपस्थिति रही। परीक्षा के व्यवस्थापक रोशन पुगलिया की उपस्थिति में परीक्षा संपन्न हुई।

साउथ हावड़ा

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में राजेंद्र सिंह मुणोत के निवास स्थान पर ज्ञानशाला का शुभारंभ हुआ। जिसमें लगभग १३ ज्ञानार्थियों ने भाग लिया।

इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि जीवन निर्माण में ज्ञान का महत्त्वपूर्ण स्थान है। ज्ञान के बिना दर्शन स्थिर नहीं हो सकता और न ही चारित्र की आराधना की जा सकती है। ज्ञान से बढ़कर कोई पवित्र वस्तु नहीं है। ज्ञान प्राप्ति का उपक्रम है—ज्ञानशाला। ज्ञानशाला गुरुदेव तुलसी की अनमोल देन है। ज्ञानशाला के द्वारा व्यक्ति सुसंस्कारों का अर्जन करता है।

ज्ञानशाला वर्तमान की आवश्यकता है। आंदुल रोड में ज्ञानशाला प्रारंभ हो रही है। सभी बच्चे जागरूकता से ज्ञानशाला में ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास करें। मुनिश्री ने ज्ञानशाला का प्रशिक्षण भी प्रदान किया।

इस अवसर पर साउथ हावड़ा तेरापंथी सभा के अध्यक्ष लक्ष्मीपत बाफना, राकेश संचेती, मंत्री बसंत पटावरी, संदीप सिंह मुणोत ने अपने-अपने विचार व्यक्त किए।

धुलागढ़, पश्चिम बंगाल

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में भंवरलाल बैद की फैक्ट्री में कोलकाता ज्ञानशाला प्रशिक्षिका वर्ग द्वारा स्वागत कार्यक्रम किया गया। जिसमें ७३ प्रशिक्षिकाओं एवं अच्छी संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लिया।

इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि जीवन निर्माण में संस्कारों का बहुत महत्त्व है। संस्कार प्राप्ति का महत्त्वपूर्ण उपक्रम है—ज्ञानशाला। ज्ञानशाला ज्ञान का मंदिर है, संस्कारों का घर है, संस्कारों की पौध है। मुनिश्री ने आगे कहा कि वे माँ-बाप भाग्यशाली हैं जिनके बच्चे ज्ञानशाला में सुसंस्कारों का विकास करते हैं। मुनिश्री ने ज्ञान का महत्त्व बताते हुए कहा कि ज्ञान जीवन का अनमोल रत्न है। जितना ज्ञान का विकास होगा, उतना ही अध्यापन करने में सुविधा होगी। ज्ञानशाला में जो बहनें समय देती हैं, उनका भी विकास होता है।

बाल मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। कार्यक्रम का शुभारंभ ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं के मंगलाचरण से हुआ। वृहद कोलकाता एवं दक्षिण बंगाल ज्ञानशाला आंचलिक संयोजक प्रेमलता चोरड़िया, तेरापंथी सभा, कोलकाता के अध्यक्ष अजय भंसाली, महासभा पंच मंडल सदस्य भंवरलाल बैद, आंचलिक प्रभारी तेजकरण बोथरा, ज्ञानशाला कार्यसमिति सदस्य महालचंद भंसाली, सह-संयोजक संजय पारख, कोलाघाट से पूजा रितु बोथरा, डॉ० समता चोरड़िया ने अपनी भावनाएँ व्यक्त की।

ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं ने स्वागत, गीत व नाटिका प्रस्तुत की। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी ने किया।

गोरेगाँव (मुंबई)

माणकगणी जोन की सह-ज्ञानशाला संतोष नगर में एसएसबी के विद्यार्थियों की परीक्षा का आयोजन किया गया। परीक्षा के लिए विशेष रूप से जोगेश्वरी से सीमा सिंघवी एवं सविता बड़ाला ने उपस्थिति प्रदान की।

परीक्षा के पेपर ज्ञानशाला संयोजक सुमित चोरड़िया, मदन बड़ाला, महिला मंडल से सह-संयोजिका मीना धींग एवं मुख्य प्रशिक्षिका प्रतीक्षा चोरड़िया के नेतृत्व में खोला गया।

१५ बच्चों ने परीक्षा दी। इस अवसर पर सभी अभिभावकों एवं बच्चों की अच्छी उपस्थिति रही। स्थानीय पूजा सिंघवी, निकिता सिंघवी एवं लीला बड़ाला ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई।

वित्तीय उत्थान के साथ-साथ वृत्त की शुचिता को वृद्धिंगत करने का भी प्रयास किया जाए तो स्वस्थ समाज की संरचना की दिशा में प्रस्थान हो सकता है।

– आचार्यश्री महाश्रमण

मर्यादा महोत्सव पर विशेष

अर्हम

● **साध्वी अमितरेखा** ●

है तेरापंथ रे संविधान री
सचमुच अजब कहानी
सचमुच अजब कहानी
अटे चले नहीं मनमानी।।

गुरु भिक्षु निज पर स्यूं मर्यादा रो बिरवो रोप्यो।
पा युग रे अनुकूल पटधर गणपति आसण ओप्यो।
है एक गुरु री आण जी
आ तेरापंथ पहचाण जी
अनुशासन में चालणिये री, फहेह सदा है मानी।।

जयाचार्य री सूझबूझ पर, सबनै इचरज भारी।
देख अलौकिक प्रतिभा प्यारी, जावां म्हें बलिहारी।
गुरु आणा सिर मोड़ है
आ सात हाथ री सोड़ है
गण गणपति हित देवे हस हस प्राणां री कुर्बानी।।

एक-एक स्यूं हूया दीपता आचारज है सारा।
आभारी जय गणपति रा उत्सव दिया सुप्यारा।
ओ माघ महोत्सव खास है
जनता ने पूरी आश है
मुक्त हाथ स्यूं बाँटे खुशियाँ बणकर प्रभु महादानी।।

महाश्रमण और मुख्यमुनि री जोड़ी जमी निराली।
साध्वीप्रमुखा साध्वीवर्या रो पद है गौरवशाली।
माना सतयुग साक्षात् है
हर दिन स्वर्णिम प्रभात है
'अमित' करा मर्यादा रक्षा सदा संघ सहनानी।।

लय : स्वामीजी थांरी साधना----

आध्यात्मिक मिलन समारोह

सूरत।

मुनि मोहजीत कुमार जी बालोतरा का चातुर्मास पूर्ण कर गुरु आज्ञानुसार पदयात्रा करते हुए सूरत पधारे, जहाँ पर्वत पाटिया से साध्वी सम्यक्प्रभा जी के साथ उनका आध्यात्मिक मिलन हुआ।

तेरापंथ भवन, पर्वत पाटिया में विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि मोहजीत कुमार जी ने कहा कि सूरत की भूमि हमारी चिर-परिचित भूमि है। कई वर्षों पूर्व शासनश्री श्रद्धेय मुनि सुखलाल जी स्वामी के साथ सूरत में हमें चातुर्मास करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। तब के और आज के सूरत में बहुत बड़ा बदलाव आ गया है। सूरत की सूरत और सीरत दोनों बदल गए हैं। यहाँ की भूमि आध्यात्मिक भूमि है।

साध्वी सम्यक्प्रभा जी के साथ हमारा सम्यक् आध्यात्मिक मिलन हुआ है। साध्वीश्री जी ने यहाँ पर बहुत पुरुषार्थ किया है और धर्म भावना को उत्तरोत्तर वृद्धिंगत कर रही हैं। इस अवसर पर मुनि भव्य कुमार जी एवं मुनि जयेश कुमार जी भी उपस्थित थे।

साध्वी सम्यक्प्रभा जी ने कहा कि संत जहाँ पर पहुँचते हैं वहाँ का समग्र आभामंडल पवित्र हो जाता है। आज बहन-भाई का आध्यात्मिक मिलन सहज रूप से हो गया है। मुनिश्री परम विद्वान हैं। आप सतत् पुरुषार्थ कर रहे हैं। सूरत आध्यात्मिक भूमि है यहाँ पर जिस बीज का वपन किया जाता है वह समय के चलते वटवृक्ष बन जाता है। साध्वी सौरभप्रभा जी, साध्वी मलयप्रभा जी एवं साध्वी वर्धमानयशा जी उपस्थित थे।

तेरापंथी सभा, पर्वत पाटिया के अध्यक्ष गौतम ढेलड़िया, ज्ञानचंद कोठारी, अर्जुन मेड़तवाल, प्रदीप गंग आदि ने अपने-अपने विचार प्रस्तुत किए।

✦ *सत्य के प्रति अपना संपूर्ण समर्पण करने वाला व्यक्ति सत्य का साक्षात्कार कर सकता है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

महिला मंडल के विविध आयोजन

स्कूल में पुस्तकालय का निर्माण

चेन्नई।

समृद्ध राष्ट्र योजना के अंतर्गत अभातेममं द्वारा निर्देशित 'फीड दा माइंड' पाठशाला पुस्तकालय परियोजना के तहत तेममं, चेन्नई द्वारा पंचायत यूनियन मिडिल स्कूल, नालूर, चेन्नई में पुस्तकालय का निर्माण किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ सामूहिक नमस्कार महामंत्रोच्चार से हुआ। महिला मंडल की बहनों ने प्रेरणा गीत का संगान किया।

तेममं की अध्यक्षा पुष्पा हिरण ने अभातेममं के इस उपक्रम के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए आगंतुकों का स्वागत किया। सहमंत्री लता पारख ने अंग्रेजी में लाइब्रेरी की उपयोगिता के बारे में जानकारी प्रदान की।

पुस्तकालय का उद्घाटन लाइब्रेरी के प्रायोजक समदड़िया परिवार, मुख्य अतिथि माला कातरेला, महिला मंडल अध्यक्ष, मंत्री एवं राजनीतिक क्षेत्र में महानुभाव ग्राम पंचायत के प्रेसिडेंट डी० अमृद वल्ली दिल्ली, वाइस प्रेसिडेंट सेल्वि बालकृष्णन के द्वारा हुआ।

स्कूल की साइंस प्रशिक्षिका ने आभार जताया। बच्चों को गिफ्ट के रूप में टिफिन बॉक्स भी प्रदान किए गए। लाइब्रेरी परियोजना के प्रायोजक ताराबाई, महावीर, रंजीत, आनंद, प्रवीण, अक्षय समदड़िया अंबत्तूर-चेन्नई रहे।

स्कूल की प्रिंसिपल ललिता ने महिला मंडल द्वारा स्कूल में अपेक्षानुसार सहयोग के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया। बच्चों ने महिला मंडल का आभार व्यक्त किया। स्कूल की सभी प्रशिक्षिकाओं का सहयोग रहा। कार्यक्रम में महिला मंडल द्वारा प्रायोजक एवं राजनीतिक क्षेत्र में महानुभावों का सम्मान किया गया। कार्यक्रम में तेयुप, चेन्नई से सहमंत्री कोमल डागा की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम का संचालन महिला मंडल मंत्री रीमा सिंघवी ने किया। संयोजिका आशा मांडोत एवं सभी पदाधिकारीगण, परामर्शक एवं कार्यसमिति सदस्यों का सहयोग रहा। अरविंद चोरड़िया का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। धन्यवाद ज्ञापन उपाध्यक्ष गुणवंती खांटेड ने किया।

कार्यशाला का शुभारंभ

आर०आर० नगर।

कालूतत्वशत (वर्ग प्रथम) पर बोर्ड गेम प्रतियोगिता का आयोजन तेममं द्वारा किया गया। संरक्षिका गुलाब छाजेड़ द्वारा नमस्कार महामंत्र से कार्यशाला का शुभारंभ हुआ। मंगलाचरण के रूप में महिला मंडल की बहनों द्वारा प्रेरणा गीत का संगान किया गया। अध्यक्ष लता बाफना ने नववर्ष की शुभकामनाओं से सभी का स्वागत करते हुए नववर्ष में नए संकल्प लेने की प्रेरणा दी।

प्रवक्ता उपासिका कंचन छाजेड़ ने बहनों को बोर्ड गेम खिलवाया। प्रतियोगिता में जोड़े से बहनों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता में प्रथम रही वंदना भंसाली, द्वितीय स्थान पर हेमलता सुराणा एवं तृतीय स्थान पर नीतू बाफना रही। सभी बहनों ने अच्छी संख्या में एवं बड़े उत्साह के साथ इस प्रतियोगिता में भाग लिया। आभार ज्ञापन ममता दुगड़ ने किया। नववर्ष का प्रारंभ रोचक प्रतियोगिता के साथ हुआ। श्वेता कोठारी का विशेष सहयोग रहा। संचालन मंत्री सीमा छाजेड़ ने किया।

द पॉवर ऑफ रिसॉल्यूशन का आयोजन

चेन्नई।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं, चेन्नई के तत्त्वावधान में रूपांतरण की शृंखला में 'द पॉवर ऑफ रिसोलूशन' जनवरी माह की कार्यशाला का आयोजन हुआ।

कार्यशाला का शुभारंभ सामूहिक नमस्कार महामंत्रोच्चार से हुआ। तत्पश्चात महिला मंडल की बहनों ने प्रेरणा गीत का संगान किया। श्रावक-निष्ठा पत्र का वाचन पूर्वाध्यक्ष कमला गेलड़ा ने किया।

अध्यक्षा पुष्पा हिरण ने सभी का स्वागत करते हुए नववर्ष के उपलक्ष्य में कार्यशाला के विषय में अपने भाव व्यक्त किए।

संरक्षिका कमला गेलड़ा, मंत्री रीमा सिंघवी, परामर्शक सुमन बरमेचा, उषा बोहरा, सहमंत्री कंचन भंडारी, कोषाध्यक्ष हेमलता नाहर, प्रचार-प्रसार मंत्री सुभद्रा लुणावत, रतनबाई लुंकड़, कनक पुगलिया, सूरज बोथरा, सुमित्रा सुराणा, उषा धोका, राजेश्वरी रांका ने अपने-अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम के दौरान घाती-अघाती कर्म बोर्ड गेम का आयोजन रखा गया। मंत्री रीमा सिंघवी ने कार्यक्रम का संचालन किया। धन्यवाद ज्ञापन सहमंत्री कंचन भंडारी ने किया।

द पॉवर ऑफ एफर्मेशन कार्यशाला

टी-दासरहल्ली।

अभातेममं के निर्देशानुसार महिला मंडल द्वारा कार्यशाला का आयोजन मुनि सुधाकर जी के सान्निध्य में हुआ। कार्यशाला का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र द्वारा हुआ। अध्यक्षा रेखा मेहर ने सभी का स्वागत करते हुए मुनिश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की एवं कार्यशाला की जानकारी दी।

मुनि सुधाकर जी ने कहा कि मानव-मानव में मतभेद का होना सवाभाविक है, मगर मन का भेद ना हो। सबसे पहले जब कोई भी अनुप्रेक्षा करते हैं, भावना भाते हैं तो हमें एक चिंतन करना चाहिए क्योंकि संकल्पजा से जो भी संकल्प हम करते हैं वैसे ही हम बन जाते हैं। जैसी व्यक्ति की सोच होती है वैसी ही दुनिया बन जाती है। हर परिवार में पहला शब्द सकारात्मक होना चाहिए।

मुनि नरेश कुमार जी ने गीतिका का संगान करते हुए सकारात्मक सोच के बारे में बताया। मंडल से पूर्णिमा कटोतिया ने अपने विचार रखे। कन्या मंडल प्रभारी सोनिया पोखरना ने एफर्मेशन एवं रिसोल्यूशन का अर्थ समझाया। कार्यशाला का संचालन अध्यक्षा रेखा मेहर ने किया। सभा परिवार, तेयुप एवं महिला मंडल की अच्छी उपस्थिति रही। आभार ज्ञापन उपाध्यक्षा दीपिका गांधी ने किया।

दृढ़ संकल्प वाला व्यक्ति हमेशा सफल होता है

बालोतरा।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं के तत्त्वावधान में 'द पॉवर ऑफ रिसॉल्यूशन' कार्यशाला का आयोजन शासनश्री साध्वी कुंथुश्री जी व साध्वी रतिप्रभा जी के सान्निध्य में किया गया। महिला मंडल मंत्री संगीता बोथरा ने बताया कि सर्वप्रथम नमस्कार महामंत्र का संगान किया गया। इसके बाद महिला मंडल की बहनों द्वारा प्रेरणा गीत का संगान किया गया। महिला मंडल अध्यक्षा निर्मला देवी संकलेचा ने स्वागत भाषण दिया।

शासनश्री साध्वी कुंथुश्री जी ने कहा कि सबसे विशिष्ट संकल्प की शक्ति होती है, जिसने संकल्प कर लिया वह व्यक्ति क्या नहीं कर सकता। भगवान महावीर ने संकल्प लिया था कि जब तक केवल ज्ञान प्राप्त नहीं होगा तब तक साधना करता रहूँगा। इसी तरह गौतम बुद्ध ने भी संकल्प लिया जब तक बोधि प्राप्त नहीं होती तब तक वृक्ष के नीचे साधना करता रहूँगा। आचार्य भिक्षु भी संकल्प के धनी थे। साध्वीश्री जी ने अनेक उदाहरणों के माध्यम से संकल्प के बारे में विस्तार से समझाया।

इस अवसर पर परामर्शक लुणी देवी गोलेछा, पीपी देवी ओस्तवाल, अभातेममं सदस्य व मारवाड़ क्षेत्र प्रभारी सारिका बागरेचा, कोषाध्यक्ष उर्मिला सालेचा, सहमंत्री रेखा बालड़, प्रचार-प्रसार मंत्री पुष्पा सालेचा, निवर्तमान अध्यक्षा अयोध्या देवी ओस्तवाल, पूर्व परामर्शक कमलादेवी ओस्तवाल, पूर्व अध्यक्षा सहित लगभग १०० बहनें उपस्थित थीं। कार्यक्रम का संचालन व आभार ज्ञापन मंत्री संगीता बोथरा ने किया।

लाइब्रेरी का अनावरण

वाशी।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं, मुंबई के तत्त्वावधान में लाइब्रेरी का अनावरण 'फीड द माइंड' के अंतर्गत शंकरलाल विश्वासराव स्कूल में लाइब्रेरी का अनावरण साध्वी पंकजश्री जी की सहवर्ती साध्वी शारदाप्रभा जी एवं साध्वी सम्यक्त्वयशा जी के सान्निध्य में किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत साध्वी शारदाप्रभा जी द्वारा नमस्कार महामंत्र से हुई। तेममं, वाशी की बहनों द्वारा मंगलाचरण की प्रस्तुति हुई। स्वागत संयोजिका इंदु बड़ाला ने किया।

मुंबई, महिला मंडल की अध्यक्षा रचना हिरण ने अपने वक्तव्य में बच्चों को किताबों का महत्त्व एक कहानी के माध्यम से समझाया। स्कूल की प्रिंसिपल रमेश गाडके ने मंडल का आभार ज्ञापन किया।

तेरापंथ सभा अध्यक्ष विनोद बाफना ने अपनी बात रखी। तेयुप महावीर सोनी ने भी भाव व्यक्त किए। लाइब्रेरी के अनावरण में हेमलता-अशोक आच्छा का विशेष सहयोग रहा।

कार्यक्रम में अलका मेहता, उपाध्यक्षा विमला कोठारी, कोषाध्यक्ष सुनीता सुतरिया, मीना, कार्यसमिति सदस्य शीला चंडालिया, अनिता सियाल की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन सह-संयोजिका अनिता चपलोत ने किया। आभार ज्ञापन अभातेममं कार्यसमिति सदस्या निर्मला चंडालिया ने किया।

द पॉवर शिल्पशाला का आयोजन

राजराजेश्वरी नगर।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं आर०आर० नगर, बैंगलुरु द्वारा 'The Power of Resolutions and life without cruelty शिल्पशाला का आयोजन तेरापंथ सभा भवन में किया गया।

द पॉवर शिल्पशाला का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से किया गया। तत्पश्चात प्रेरणा गीत का संगान महिला मंडल की बहनों द्वारा किया गया। अध्यक्षा लता बाफना ने सभी का स्वागत किया।

मुख्य वक्ता का परिचय पूनम दुगड़ ने दिया। मुख्य वक्ता मोटिवेशनल स्पीकर संगीता गन्ना ने रिसॉल्यूशन का अर्थ विस्तार से समझाया। इस साल का सबसे महत्त्वपूर्ण और सबसे अच्छा रेजलूशन संकल्प करें कि जो जीवनशैली हम जी रहे हैं, हम अहिंसा के मार्ग पर चल रहे हैं। औरों को भी प्रेरित करेंगे।

एक गेम के द्वारा शिल्पशाला को रोचक बनाया गया। कार्यशाला का संचालन मंत्री सीमा छाजेड़ ने किया। आभार ज्ञापन सपना तातेड़ ने किया।

उम्मीद एक बेहतरीन कल की

चेंबूर (मुंबई)।

निर्माण परियोजना के अंतर्गत 'उम्मीद एक बेहतर कल की' कार्यक्रम अभातेममं के निर्देशन में तेममं के तत्त्वावधान में एफेक स्कूल कक्षा ५वीं, ७वीं तक के विद्यार्थियों के लिए किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत कुसुम हिरण द्वारा महाप्राण ध्वनि व महिला मंडल के मंगलाचरण द्वारा हुई। सभी बच्चों को मंडल की जानकारी व स्वागत चेंबूर संयोजिका तारा आच्छा द्वारा दी गई।

योगा लॉफ्टर टीचर्स ने सभी बच्चों को लॉफ्टर योगा करवाया। कुसुम हिरण, सत्य एवं भावना बड़ाला ने ईमानदारी पर बच्चों को कहानी सुनाई व टीना हिरण ने सभी बच्चों को गेम खिलाया। मुंबई कार्यकारिणी से अंजू कोठारी के साथ चेंबूर से स्नेहलता बड़ाला, जूली परमार, साधना धाकड़, अनोखा इंटोदिया, मंजू मेहता, रेखा गोखरू सहित १५० बच्चों की उपस्थिति रही।

संकल्प द्वारा कार्यक्रम का समापन किया गया व सभी टीचर, बच्चों ने इस कार्यक्रम की सराहना की। बच्चों को प्रश्न पूछे गए एवं सभी बच्चों को प्रोत्साहित करने के लिए उपहार भी दिया गया।

नई कार्यकारिणी का गठन

रांची।

मुनि डॉ० ज्ञानेंद्र कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ महिला मंडल के सदस्यों के साथ बैठक आयोजित हुई, जिसमें सुमन बरमेचा को अध्यक्षा के रूप में मनोनीत किया, जिसे सभी सदस्यों के द्वारा सर्वसम्मति से स्वीकृति दी गई।

अध्यक्ष पदभार ग्रहण करने के बाद सुमन बरमेचा ने अपनी नई टीम एवं कार्यकारिणी सदस्यों की घोषणा की।

आध्यात्मिक मिलन समारोह का आयोजन

शाजापुर।

साध्वी डॉ० पीयूषप्रभा जी के शाजापुर (मध्य प्रदेश) के प्रवास में द्वितीय दिवस पर श्रमण संघ की विदुषी साध्वी कीर्तिसुधा जी के साथ आध्यात्मिक मिलन हुआ। जैन श्वेतांबर स्थानकवासी समाज के निवेदन पर डॉ० साध्वी पीयूषप्रभा जी एवं साध्वी दीप्तियशा जी ने साध्वी कीर्तिसुधा जी से भेंट की। अत्यंत सौहार्दपूर्ण वातावरण में साध्वी कीर्तिसुधा जी अपनी साध्वियों के साथ साध्वी डॉ० पीयूषप्रभा जी के सामने पधारीं। धार्मिक चर्चा के दौरान दोनों ही अग्रणी साध्वियों ने श्रमण संघ के आचार्य आनंद ऋषि जी म०सा०, आचार्य शिव मुनिजी म०सा० का एवं तेरापंथ संघ के आचार्यश्री तुलसी जी, आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी एवं आचार्यश्री महाश्रमण जी के प्रति आदर एवं प्रमोद भावना व्यक्त की।

साध्वी कीर्तिसुधा जी ने कहा कि समय-समय पर तेरापंथ के आचार्य एवं साधु-साध्वियों से मिलन होता रहता है। यहाँ तक कि शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी से २ वर्ष पूर्व मिलकर आनंद हुआ था। हम सभी साधना में, तपस्या में, ज्ञान में आगे बढ़ते रहें, ऐसी मंगलकामना करते हैं।

साध्वी डॉ० पीयूषप्रभा जी ने जैन विश्व भारती व आचार्यश्री महाश्रमण जी के जैन एकता एवं संवत्सरी के प्रयास पर चर्चा की। सकल जैन समाज इस भावपूर्ण आध्यात्मिक मिलन को देखकर हर्ष-विभोर था। उल्लेखनीय है शाजापुर के इतिहास में प्रथम बार तीनों संप्रदाय के साधु-साध्वियाँ शाजापुर में विराजित हैं। लोगों का परस्पर सौहार्द एवं व्यवहार जैन समाज की एकता को दर्शा रहा है।

संतों का मिलन स्नेह-सौहार्द के विकास की प्रेरणा देता है

राजलदेसर।

तेरापंथ भवन में विराजित शासनश्री साध्वी मानकुमारी जी के साथ मुनि रणजीत कुमार जी का आध्यात्मिक संत मिलन हुआ। मुनि रणजीत कुमार जी अपने सहवर्ती संत मुनि कौशल कुमार जी के साथ सरदारशहर रतनगढ़ मार्ग से विहार करते हुए तेरापंथ भवन पधारे। जहाँ पर शासनश्री साध्वी मानकुमारी जी के साथ उनका आध्यात्मिक मिलन हुआ। संत जनों के पारस्परिक सद्भावना के मनोरम्य दृश्य देखकर दर्शक भाव-विभोर हो उठे।

दूसरे दिन पूनमचंद बैद की हवेली में मुनिश्री का स्वागत समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुनि रणजीत कुमार जी ने कहा कि गुरुदेव की महती कृपा से कई वर्षों बाद यहाँ आना हुआ है। यह साताकारी क्षेत्र है। जब हम राजलदेसर पधारे तो यहाँ विराजित साध्वीवृंद से मिलकर आनंद की अनुभूति हो रही है।

मुनि कौशल कुमार जी ने भी धर्मसभा को संबोधित किया। इस अवसर पर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष विमल सिंह दुधेड़िया, तेयुप अध्यक्ष मुकेश सहित महिला मंडल, कन्या मंडल एवं किशोर मंडल ने अपने भावों की प्रस्तुति दी। ज्ञातव्य है कि राजलदेसर मुनि रणजीत कुमार जी की जन्मभूमि है। वे यहाँ के बेगवानी परिवार से हैं।

वृहद मंगलपाठ का आयोजन

रोहिणी, दिल्ली।

नववर्ष के अवसर पर साध्वी डॉ० कुंदनरेखा जी के सान्निध्य में वृहद मंगलपाठ एवं प्रेरणा पाथेय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। साध्वी डॉ० कुंदनरेखा जी ने उपस्थित जनमेदिनी को नववर्ष की आध्यात्मिक मंगलकामना देते हुए इस अवसर पर गीतिका का सुमधुर संगान किया।

साध्वी कुंदनरेखा जी ने कहा कि आज का दिन यादगार बन जाए। कुछ ऐसे संकल्पों को स्वीकार करें, जिससे अध्यात्म का दीया अखंड जलता रहे। सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ें। कषायों को उपशम करने के साथ-साथ आचार्यों, आगमवाणी का कम से कम एक पृष्ठ अवश्य पढ़ें। ताकि नया साल हमारे लिए वरदान बन जाए।

उपस्थित महानुभावों में दिल्ली की विभिन्न क्षेत्रीय सभाओं के पदाधिकारी एवं अन्य गणमान्यजन उपस्थित थे। आभार ज्ञापन कमल बैंगाणी ने किया।

योगक्षेम — अभातेयुप योगक्षेम योजना

✳ अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
✳ श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर	5,00,000
✳ श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना	5,00,000
✳ श्री राकेश कठोतिया, लाडनूं-मुंबई	5,00,000
✳ श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई	5,00,000
✳ श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा	5,00,000
✳ श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत	5,00,000
✳ श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई	5,00,000
✳ श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई	5,00,000
✳ श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा	5,00,000
✳ श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	5,00,000
✳ श्री जैनसुख दीपक बोथरा, छापर-सिलीगुड़ी	5,00,000
✳ श्री बसंत नवलखा, बीकानेर	5,00,000
✳ श्री बिमल चोपड़ा, गंगाशहर-यमुनानगर	5,00,000
✳ श्रद्धानिष्ठ श्रावक केशरीमल, अनिलकुमार, संजयकुमार, सुनीलकुमार चंडालिया (गंगापुर) सूरत	5,00,000

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

नामकरण संस्कार

गंगाशहर।

भीनासर निवासी पुत्रवधू विनय-मुस्कान पटवा की नवजात पुत्रीरत्न का नामकरण संस्कार निज निवास में जैन संस्कार विधि से संस्कारक देवेंद्र डागा, भरत गोलछा और विपिन बोथरा ने विधि-विधानपूर्वक मंत्रोच्चार द्वारा संपादित करवाया। तेयुप, गंगाशहर के मुकेश डागा सहयोगी के रूप में उपस्थित रहे। इस अवसर पर पारिवारिक जनों की उपस्थिति रही।

नूतन गृह प्रवेश

पूर्वांचल-कोलकाता।

सरदारशहर निवासी, पूर्वांचल-कोलकाता प्रवासी प्रताप-डिंपल दुगड़ का नूतन गृह प्रवेश संस्कारक विजय बरमेचा ने संपूर्ण विधि-विधान द्वारा नमस्कार महामंत्र, मंगल-स्तोत्रों के उच्चारण के साथ गृह प्रवेश संपादित करवाया। तेयुप की ओर से नरेंद्र पारख एवं श्रेयांस भंसाली ने शुभकामनाएँ प्रेषित कर मंगलभावना यंत्र प्रदान किया साथ ही दुगड़ परिवार के प्रति आभार ज्ञापित किया।

सरदारपुरा।

नितिन कोठारी-मनीषा कोठारी का नूतन गृह प्रवेश संस्कारक भूपेश तातेड़, जितेंद्र गोगड़, बसंत जैन, ऋषभ श्यामसुखा ने संपूर्ण विधि-विधान व मंत्रोच्चार द्वारा संपन्न करवाया। अशोक कोठारी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए दोनों परिषदों के संस्कारकों का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में अभातेयुप के सदस्य नितेश कोठारी की उपस्थिति रही।

पाणिग्रहण संस्कार

सूरत।

कालू (बीकानेर) निवासी, सूरत प्रवासी भीकमचंद नाहटा के सुपुत्र प्रतीक नाहटा का शुभ पाणिग्रहण संस्कार भीनासर निवासी, सूरत प्रवासी पवन लुंकड़ की सुपुत्री नैना जैन के साथ जैन संस्कार विधि से संस्कारक विजय कांत खटेड़, प्रकाश डाकलिया व मीठालाल भोगर ने मंगल मंत्रोच्चार द्वारा संपन्न करवाया। भीकमचंद व पवन एवं उनके पूरे परिवार ने संस्कारकों व उपस्थित सभी लोगों का आभार ज्ञापन किया। तेयुप, सूरत की ओर से मंगलभावना पत्रक संस्कारकों ने भेंट किया।

विजयनगर।

कंटालिया निवासी पुणे प्रवासी शांतिलाल प्रेमलता जैन के सुपुत्र विनय शांतिलाल जैन एवं मारवाड़ जंक्शन निवासी बैंगलुरु प्रवासी तेजराज जैन की सुपुत्री आशा बाई का विवाह जैन संस्कार विधि से संस्कारक राकेश दुधेड़िया मुख्य संस्कारक तथा सहयोगी संस्कारक के रूप में विकास बांठिया, आशीष सिंघी एवं धीरज भादानी ने संपन्न करवाया। आभार ज्ञापन विजयनगर जैन संस्कार विधि के प्रभारी धीरज भादानी ने किया।

विजयनगर।

बगड़ीनगर निवासी कोलार गोल्ड फील्ड्स (केजीएफ) प्रवासी गौतमचंद मूथा के सुपुत्र नीरज कुमार मूथा एवं निवासी तथा प्रवासी मुरैना विमल चंद्र-दिलवारी की सुपुत्री मेघा का विवाह संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक राकेश दुधोड़िया ने मुख्य संस्कारक तथा सहयोगी संस्कारक विकास बांठिया, कमलेश चौपड़ा एवं धीरज भादानी ने मंगल मंत्रोच्चार द्वारा संपन्न करवाया। परिषद द्वारा परिवार को मंगलभावना यंत्र भेंट किया गया। आभार ज्ञापन जैन संस्कारक कमलेश चौपड़ा ने किया।

नूतन भूमि पूजन

गंगाशहर।

तुलसी देवी-शुभकरण सामसुखा के नूतन गृह हेतु भूमि के शिलान्यास का कार्यक्रम जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक राजेंद्र सेठिया, धर्मेंद्र डाकलिया, पवन छाजेड़ और देवेंद्र डागा ने विधि-विधानपूर्वक मांगलिक मंत्रोच्चार के साथ संपन्न करवाया। इस अवसर पर परिवार के सदस्य और समाज के गणमान्य लोगों की उपस्थिति रही।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
30 जनवरी - 5 फरवरी, 2023

✦ *जो अपने पर अनुशासन नहीं कर सकता, वह औरों पर अनुशासन कैसे करेगा?*

–आचार्यश्री महाश्रमण

मनोनुशासनम्

❑ **आचार्य तुलसी** ❑

पहला प्रकरण

सूक्ष्म प्राणायाम का अभ्यास अनेक विधियों से किया जा सकता है–

(१) सर्वप्रथम दीर्घ-श्वास का अभ्यास करें। धीमे-धीमे श्वास को भीतर गहरे में ले जाएँ और धीमे-धीमे उसका रेचन करें। इस क्रिया से नाभि के आस-पास तक प्रकंपन पैदा हो जाता है। कम से कम इसकी बीस-पचीस आवृत्तियाँ होनी चाहिए।

(२) श्वास पर ध्यान केंद्रित करने से वह शांत, मंद और दीर्घ अपने आपको हो जाता है।

(३) सामान्यतः हम एक मिनट में पंद्रह श्वास और पंद्रह निःश्वास लेते हैं। दो सेकेंड में एक श्वास या एक निःश्वास होता है। क्रमिक अभ्यास के द्वारा एक मिनट में छह श्वास और छह निःश्वास, फिर तीन श्वास और तीन निःश्वास, फिर दो श्वास और दो निःश्वास तथा एक श्वास और एक निःश्वास एक मिनट में करें। यह सूक्ष्म प्राणायाम है। इससे मन को स्थिर, शांत करने में बहुत सहयोग मिलता है।

योग की भाषा में प्राण, बिंदु (वीर्य) और मन पर्यायवाची जैसे हैं। प्राण पर विजय पा लेने से बिंदु और मन पर विजय हो जाती है। बिंदु पर विजय पा लेने से प्राण और मन विजित हो जाते हैं। मन पर विजय पा लेने से प्राण और बिंदु सध जाते हैं। तीनों में से किसी एक की साधना करने पर शेष दो स्वयं सध जाते हैं।

प्राण, बिंदु और मन–इन तीनों में प्राण का स्थान पहला है। पहला इस अर्थ में है कि प्राण की साधना के बिना उन दोनों को साधना सर्व साधारण के लिए कठिन कार्य है।

समताल श्वास–जितनी मात्रा में पहला श्वास लिया गया, उतनी ही मात्रा में दूसरा, तीसरा। इस प्रकार तालबद्धश्वास लेना समताल श्वास है।

दीर्घश्वास–लंबा श्वास लेना।

कायोत्सर्ग–कायोत्सर्ग का अर्थ है–शरीर की चंचलता का विसर्जन। इसका विवेचन कायोत्सर्ग के प्रकरण में किया जाएगा।

कायशुद्धि के उपाय

कायोत्सर्ग, आसन, मूलबंध, उड्डीयानबंध, जालंधरबंध, व्यायाम, प्राणायाम और निर्लेपता–ये कायशुद्धि के उपाय हैं।

कायशुद्धि के उपर्युक्त आसनों का वर्णन आसन प्रकरण में किया जाएगा।

मूलबंध–गुदा को ऊपर की ओर खींचने को मूलबंध कहा जाता है। साधना की प्रत्येक अवस्था में मूलबंध करना बहुत आवश्यक है। वह एक प्रकार से साधना का आधारभूत है। इससे मूल नाड़ी सीधी हो जाती है। मन की एकाग्रता करने के लिए यह बहुत अपेक्षित है।

उड्डीयानबंध–श्वास का रेचन कर पेट को सिकोड़ना उड्डीयानबंध है। उड्डीयान करते समय छाती का भाग थोड़ा आगे की ओर उभरा हुआ होना चाहिए। उदर संबंधी दोषों को मिटाने के लिए यह एक महत्त्वपूर्ण उपाय है। इससे अग्नि प्रज्वलित होती है। पेट को सिकोड़ने पर इसका अंतर्भाग पृष्ठरज्जु से सटकर उस पर दबाव डालता है। उससे तैजस्शक्ति (कुंडलिनी) और ज्ञानतंतु दोनों प्रदीप्त होते हैं।

जालंधरबंध–ठुड्डी को कंठकूप में स्थापित करने को जालंधर बंध कहा जाता है। सर्वांगासन, हलासन, मत्स्यासन की एक मुद्रा में यह अपने आप हो जाता है। मानसिक विकास के लिए यह बहुत उपयोगी है। इससे कंठमणि पर उचित दबाव पड़ता है। आधुनिक शरीर-शास्त्रियों के अनुसार कंठमणि ही शरीर में रक्त, ताप तथा प्रेम, ईर्ष्या, द्वेष आदि वृत्तियों को नियंत्रित करता है। यह हमारे शरीर की नियामक ग्रंथि है। इस पर जालंधरबंध के द्वारा हम नियंत्रण रख सकते हैं और अनेक उपयोगी रसों का स्राव कर सकते हैं।

मूलबंध लंबे समय तक तथा चाहे जितनी बार किया जा सकता है। उड्डीयानबंध का अभ्यास भोजन करने से पूर्व किया जा सकता है। किंतु प्रारंभ में लंबे समय तक करना उचित नहीं है। पेट को भीतर की ओर सिकोड़कर आधा मिनट तक रखा जा सकता है। एक सप्ताह के अभ्यास के बाद एक मिनट तक। एक प्रकार प्रति सप्ताह आधा या एक मिनट बढ़ाते-बढ़ाते अपनी शक्ति व सहिष्णुता के अनुसार आधा घंटा तक बढ़ाया जा सकता है। इस बंध के साथ मूलबंध अवश्य होना चाहिए तथा आँखें खुली नहीं होनी चाहिए अन्यथा उनकी ज्योति नष्ट होने की संभावना रहती है। जालंधरबंध का समय भी उड्डीयानबंध की भाँति क्रमशः बढ़ता है। इसे साधारण आदमी को पाँच-सात मिनट से ज्यादा नहीं बढ़ाना चाहिए कुछ समय के लिए तीनों बंध एक साथ किए जा सकते हैं।

व्यायाम–हाथ, पैर या किसी भी अवयव को इच्छानुसार सिकोड़ना और फैलाना व्यायाम है।

निर्लेपता–विषयों की आसक्ति से शरीर की अशुद्धि होती है। विषय विकार के हेतु बनते हैं और विकार से कायिक दोष उत्पन्न होते हैं। अनासक्त (निर्लेप) व्यक्ति सहज भाव से कायिक दोषों से बच जाता है।

वाक्शुद्धि के उपाय

(१) प्रलंबनाद का अभ्यास। (२) सत्यपरक प्रयोग।

वाक् मन परिष्कृत होकर ही प्रकट होती है। मन की सरलता होती है तब वाणी शुद्ध रहती है। मन की कुटिलता होने पर वह अशुद्ध हो जाती है। जिस साधक का मन सरल और पवित्र होता है, उसे वाक्-सिद्धि प्राप्त होती है। वह जो कहता है वही हो जाता है। वाणी में यह शक्ति उसकी मानसिक पवित्रता से प्राप्त होती है।

ॐ, अर्हं, सोहम् आदि मंत्राक्षरों का दीर्घ उच्चारण करने से मन वाणी के साथ जुड़ जाता है। मन का योग पाकर वाणी शक्तिशाली हो जाती है। वह वायुमंडल में तीव्र कंपन पैदा कर देती है। उससे अनिष्ट परमाणु दूर हो जाते हैं और इष्ट परमाणुओं का परिपार्श्व बन जाता है।

दीर्घोच्चारण का अभ्यास दो मिनट से प्रारंभ कर पंद्रह मिनट तक बढ़ाना चाहिए। प्रति सप्ताह दो मिनट बढ़ाया जा सकता है। इस अभ्यास में मन को समस्याओं से मुक्त और सरल रखना आवश्यक है।

(क्रमशः)

साँसों का इकतारा

❑ **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा** ❑

(१२३)

देखा जितना पास से उतने ही अनजान।
नहीं कभी भी हो सकी तुलसी की पहचान।।

उच्छ्वासों के नीड़ को दो दृढ़तम आधार
सुयश गीत गाती रहे पल-पल साँस सितार
खिलते जाएँ सृजन के शतदल सदाबहार
तरी थमा दो हाथ में तर जाए संसार
पौरुष के प्रतिमान की हर मुश्किल आसान।।

मुग्ध तुम्हारा देखकर हर अद्भुत अंदाज
छिपा नहीं पाए कभी तुमसे मन का राज
पत्थर पर अंकुर उगे तुम ऐसे ऋतुराज
आकर्षक व्यक्तित्व वह था निश्छल निर्व्याज
याद करेगी बीसवीं सदी विपुल अवदान।।

संघर्षों में भी रही मुख पर मृदु मुस्कान
चिंता का करते सदा चिंतन से अवसान
प्रतिस्रोत में भी सदा रहे चरण गतिमान
किया निरंतर आर्य ने जागृति का आह्वान
उऋण नहीं उपकार से कोई भी इंसान।।

(१२४)

अध्यात्म जगत के शिखर पुरुष!
युग के नयनों की अभिलाषा।
तुमसे पाई है मानव ने
जीवन की सच्चाई परिभाषा।।

कर्तृत्व करिश्माई देखा
दुनिया में यश-परिमल फैली
परखे कोई अथ से इति तक
अद्भुत है जीवन की शैली
आलोक बिखेरा हर मग में
कदमों को वांछित राह मिली
पलकों की शीतल छाया में
मुरझाई मानस-कली खिली
व्यक्तित्व विलक्षण जग जाहिर
जागी जन-जन में जिज्ञासा।।

अणुव्रत प्रेक्षा का संजीवन
प्रतिदिन प्रकाम तुम बाँट रहे
करुणा का मर्म सिखाते हो
खाई दुराव की पाट रहे
हिंदू-मुस्लिम भाई-भाई
पैगाम तुम्हारा प्यारा है
रिश्तों की उजड़ी दुनिया को
तुमसे मिल रहा सहारा है
उद्बोधन की गीता सुनकर
अर्जुन में जाग उठी आशा।।

हर पुरस्कार सम्मान स्वयं
तुमसे सम्मानित हो जाता
जुड़ गया तुम्हारा नाम जहाँ
वह काम सहज गौरव पाता
ऊँचाई छूती आसमान
गहराई समदर से गहरी
चरणों में प्रणत जहान हुआ
मानवता के पक्के प्रहरी
कोमल भावों का दीप जला
है मुखर आज मन की भाषा।।

(क्रमशः)

संबोधि

❑ **आचार्य महाप्रज्ञ** ❑

बंध-मोक्षवाद

मिथ्या-सम्यग्-ज्ञान-मीमांसा

भगवान् प्राह

(२५) हव्यवाहः प्रमथ्नाति, जीर्णं काष्ठं यथा ध्रुवम्।
तथा कर्म प्रमथ्नाति, मुनिरात्मसमाहितः।।

जिस प्रकार अग्नि जीर्ण काष्ठ को भस्म कर डालती है उसी प्रकार समाधियुक्त आत्मा वाला मुनि कर्मों को भस्म कर डालता है।

जं अण्णाणी कम्मं खवेई बहुयावि वाससयसहस्सेहिं।
तं नाणी तिहिं गुत्तो, खवेई उच्छासमेत्तेण।।

अज्ञानी को जिन कर्मों के क्षय करने में लाखों वर्ष लगते हैं, वहाँ मनोवाक्काय से संयमित ज्ञानी उन कर्मों को श्वास मात्र में क्षय कर देता है। इससे संयम-संवर या निवृत्ति की महत्ता स्पष्ट अभिलक्षित होती है। महत्त्व क्रिया का नहीं है। महत्त्व है संयमयुक्त क्रिया का। यह सूत्र प्रत्येक व्यक्ति के हृदय-पटल पर अंकित रहना चाहिए। योगों (मन, वचन, काय) से संयम (गुप्ति) के अभाव में कष्ट बहुत उठाया जाता है, किंतु सार बहुत कम निकलता है। समग्र साधना-पद्धति प्रवृत्तियों के संयमन की है। आत्मशासित साधक वह होता है जो बाहर से सर्वथा संयमित होकर आत्म-ध्यान में प्रतिष्ठित हो गया है। जिसने पिंडस्थ, पदस्थ और रूपस्थ ध्यान की यात्रा का अंत कर रूपातीत की यात्रा शुरू कर दी है, जिसके ध्यान के लिए अब बाहर के विषय–अवलंबन छूट चुके हैं। वह आत्म-समाधि-संपन्न साधक कर्मों को इतनी शीघ्रता से भस्मसात् कर देता है, जैसे कि अग्नि सूखे काष्ठ को क्षणभर में ही भस्मसात् कर देती है।

(क्रमशः)

अवबोध

❑ **मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं'** ❑

धर्म बोध

तप धर्म

प्रश्न १६ : प्रायश्चित किसे कहते हैं, उसके कितने प्रकार हैं?

उत्तर : दोष विशुद्धि के लिए जो प्रयत्न किया जाता है, उसे प्रायश्चित कहते हैं। उसके दस प्रकार हैं–

(१) आलोचना – गुरु के समक्ष अपने दोषों को निवेदित करना।
(२) प्रतिक्रमण – कृत पाप से निवृत्त होने के लिए 'मिच्छामि दुक्कड़ं' कहना।
(३) तदुभय – आलोचना व प्रतिक्रमण दोनों करना।
(४) विवेक – समागत अप्रासुक आहार आदि का उत्सर्ग करना।
(५) व्युत्सर्ग – चतुर्विंशतिस्तव के साथ कायोत्सर्ग करना।
(६) तप – अनशन, ऊनोदरी आदि करना।
(७) छेद – संयम (चारित्र) को कम करना।
(८) मूल – नई दीक्षा लेना।
(९) अनवस्थापना – तपपूर्वक नई दीक्षा लेना।
(१०) पारांचिक – अवहेलनापूर्वक नई दीक्षा लेना।

प्रश्न १७ : विनय किसे कहते हैं, उसके कितने प्रकार हैं?

उत्तर : कर्मों का अपनयन और बड़ों का बहुमान विनय है। किसी की अवहेलना-आशातना न करना भी विनय है। उसके सात प्रकार हैं–
(१) ज्ञान, (२) दर्शन, (३) चारित्र, (४) मन, (५) वचन, (६) काय (शरीर), (७) लोकोपचार–अनुशासन व शिष्टाचार का पालन।
प्रथम तीन का बहुमान करना अगले तीन की कुशल-प्रवृत्ति करना।

प्रश्न १८ : वैयावृत्त्य किसे कहते हैं, उसके कितने प्रकार हैं?

उत्तर : सहयोग की भावना से निरवद्य सेवा कार्य में जुड़ना वैयावृत्त्य है। उसके दस प्रकार हैं–
(१) आचार्य का वैयावृत्त्य, (२) उपाध्याय का वैयावृत्त्य, (३) स्थविर का वैयावृत्त्य, (४) तपस्वी का वैयावृत्त्य, (५) ग्लान (रुग्ण) का वैयावृत्त्य, (६) शैक्ष (नवदीक्षित) का वैयावृत्त्य, (७) कुल (मुनि समूह) का वैयावृत्त्य, (८) गण (कुल समूह) का वैयावृत्त्य, (९) संघ (गण समूह) का वैयावृत्त्य, (१०) साधर्मिक का वैयावृत्त्य।

(क्रमशः)

उपासना

(भाग - एक)

❑ **आचार्य महाश्रमण** ❑

आचार्य तुलसी

एक दिन की बात है, ज्ञानी और तपस्वी जमाली भगवान् महावीर के पास आया। वंदना की, नमस्कार किया और बोला–'भगवन्! मैं आपकी आज्ञा पाकर पाँच सौ निर्ग्रन्थों के साथ जनपद-विहार करना चाहता हूँ।' भगवान् ने जमाली की बात सुन ली। उसे आदर नहीं दिया। मौन रहे। जमाली ने दुबारा और तिबारा अपनी इच्छा को दोहराया। भगवान् पहले की भाँति मौन रहे। जमाली उठा। भगवान् को वंदना की, नमस्कार किया। बहुशाल नामक चैतन्य से निकला। अपने साथी पाँच सौ निर्ग्रन्थों को साथ ले भगवान् से अलग विहार करने लगा।

श्रावस्ती के कोष्ठक चैत्य में जमाली ठहरा हुआ था। संयम और तप की साधना चल रही थी। निर्ग्रन्थ-शासन की कठोर चर्या और वैराग्यवृत्ति के कारण वह अरस-विरस, अंत-प्रांत, रूखा-सूखा-कालातिक्रांत, प्रमाणातिक्रांत आहार लेता। उससे जमाली का शरीर रोगांतक से घिर गया। विपुल वेदना होने लगी। कटु दुःख उदय में आया। पित्तज्वर से शरीर जलने लगा। घोरतम वेदना से पीड़ित जमाली ने अपने साधुओं से कहा–'देवानुप्रियो! बिछौना करो। साधुओं ने विनयावनत हो उसे स्वीकार किया। बिछौना करने लगे। वेदना का वेग बढ़ रहा था। एक-एक पल भारी हो रहा था। जमाली ने अधीर स्वर से पूछा–'मेरा बिछौना बिछा दिया या बिछा रहे हो?' श्रमणों ने उत्तर दिया–'देवानुप्रिय! आपका बिछौना किया नहीं, किया जा रहा है।' दूसरी बार फिर पूछा–'देवानुप्रियो! बिछौना किया या कर रहे हो?' श्रमण-निग्रन्थ बोले–'देवानुप्रिय! आपका बिछौना किया नहीं, किया जा रहा है।' इस उत्तर ने वेदना से अधीर बने जमाली को चौंका दिया। शारीरिक वेदना की टक्कर से सैद्धांतिक धारणा हिल उठी। विचारों ने मोड़ लिया। जमाली सोचने लगा–भगवान् चलमान को चलित, उदीर्यमाण को उदीरित यावत् निर्जीर्यमाण को निर्जीर्ण कहते हैं, वह मिथ्या है। यह सामने दीख रहा है। मेरा बिछौना बिछाया जा रहा है, किंतु बिछा नहीं है। इसलिए क्रियमाण अकृत, संस्तीर्यमाण असंस्तृत है–किया जा रहा है किंतु किया नहीं गया है, बिछाया जा रहा है किंतु बिछा नहीं है–का सिद्धांत सही है। इसके विपरीत भगवान् का 'क्रियमाण कृत' और संस्तीर्यमाण संस्तृत'–करना शुरू हुआ, वह कर लिया गया, बिछाना शुरू किया, वह बिछा लिया गया–यह सिद्धांत गलत है। चलमान को अचलित यावत् निर्जीर्यमाण को अनिर्जीर्ण मानना सही है। बहुरतवाद-कार्य की पूर्णता होने पर उसे पूर्ण कहना ही यथार्थ है। इस सैद्धांतिक उथल-पुथल ने जमाली की शरीर-वेदना को निर्वीर्य बना दिया। उसने साधुओं को बुलाया और अपना सारा मानसिक आंदोलन कह सुनाया। श्रमणों ने आश्चर्य के साथ सुना। जमाली भगवान् के सिद्धांत को मिथ्या और अपने परिस्थिति-जन्य अपरिपक्व विचार को सच बता रहा है। कुछेक श्रमणों को जमाली का विचार रुचा, मन को भाया, उस पर श्रद्धा जमी। वे जमाली की शरण में रहे। कुछेक जिन्हें जमाली का विचार नहीं जंचा, उस पर श्रद्धा या प्रतीति नहीं हुई, वे भगवान् की शरण में चले गए। थोड़ा समय बीता। जमाली स्वस्थ हुआ। श्रावस्ती से चला। एक गाँव से दूसरे गाँव विहार करने लगा। भगवान् उन दिनों चम्पा के पूर्णभद्र चैत्य में विराज रहे थे। जमाली वहाँ आया। भगवान् के पास बैठकर बोला–'देवानुप्रिय! आपके बहुत सारे शिष्य असर्वज्ञदशा में गुरुकुल से अलग होते हैं। वैसे मैं नहीं हुआ हूँ। मैं सर्वज्ञ, अर्हत्, जिन, केवली होकर आपसे अलग हुआ हूँ।' जमाली की यह बात सुनकर भगवान् के ज्येष्ठ अंतेवासी गौतम स्वामी बोले–'जमाली! सर्वज्ञ का ज्ञान-दर्शन शैल-स्तंभ और स्तूप से रुद्ध नहीं होता। जमाली! यदि तुम सर्वज्ञ होकर भगवान् से अलग हुए हो तो लोक शाश्वत है या अशाश्वत, जीव शाश्वत है या अशाश्वत–इन दो प्रश्नों का उत्तर दो।' गौतम के प्रश्न सुन वह शंकित हो गया। उनका यथार्थ उत्तर नहीं दे सका। मौन हो गया। भगवान् बोले–'जमाली! मेरे अनेक छद्मस्थ शिष्य भी मेरी भाँति इन प्रश्नों का उत्तर देने में समर्थ हैं। किंतु तुम्हारी भाँति अपने आपको सर्वज्ञ कहने में समर्थ नहीं हैं।

(क्रमशः)

✦ *वे लोग धन्य हैं, जो सदा शांत रहते हैं और जिनके चेहरे पर हर परिस्थिति में मुस्कान देखने को मिलती है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

टीपीएफ द्वारा साइक्लोथॉन कार्यक्रम के विविध आयोजन

हैदराबाद

टीपीएफ, हैदराबाद द्वारा टीपीएफ संकल्प के अंतर्गत साइक्लोथॉन का आयोजन कोंडापुर स्थित पाला पीट्टा साइक्लिंग पार्क में उत्साह के साथ किया। इस कार्यक्रम का आयोजन शिक्षा को बढ़ावा देना एवं स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत नवकार मंत्र से करते हुए हैदराबाद शाखा के अध्यक्ष पंकज संचेती ने सभी महानुभावों का स्वागत किया। उन्होंने सभी को शिक्षा सहयोग के लिए आगे आने का आह्वान किया। साउथ जोन के अध्यक्ष मोहित बैद एवं नेशनल प्रोजेक्ट चेयरमैन ऋषभ दुगड़ ने भी अपने विचार रखे। साइक्लिंग ट्रेक पर सभी ने अनेक राउंड लगाए। कार्यक्रम में साइक्लोथॉन के साथ-साथ अन्य गेम्स का भी आयोजन किया गया। कार्यक्रम के अंत में सभी भागीदारों को मेडल एवं पुरस्कार दिए गए।

साइक्लोथॉन में बच्चे-बड़े सभी आयु वर्ग के लगभग १५० बंधुओं की उपस्थिति रही। कार्यक्रम में टीपीएफ राष्ट्रीय टीम के कार्यकारिणी सदस्य नवीन सुराणा, पूर्व चीफ ट्रस्टी मानकचंद बलडोता, नेशनल फेमिना टीम की सह-संयोजक रक्षिता बोहरा की विशेष उपस्थिति रही। महिला मंडल अध्यक्षा अनिता गिडिया, तेयुप अध्यक्ष वीरेंद्र घोषल, सभा के सहमंत्री धर्मेंद्र चोरड़िया की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम के सफल संयोजन में अर्हम बैंगाणी, आनंद सुराणा, सुशील बैद, निखिल कोटेचा, अनुष बंबोली आदि का विशेष सहयोग रहा। मंत्री अणुव्रत सुराणा द्वारा धन्यवाद ज्ञापन किया गया।

औरंगाबाद

टीपीएफ द्वारा संकल्प साइक्लोथॉन आयोजित किया गया। साध्वी मधुस्मिता जी के मंगलपाठ एवं मंगल आशीर्वचन से रैली की शुरुआत की गई। यह रैली गुलमंडी, निराला बाजार होते हुए वापस पान दरीबा रोड तेरापंथ भवन पहुँची। इस संकल्प साइक्लोथॉन का मूल उद्देश्य यह था कि 'पढ़ेगा समाज तभी बढ़ेगा तेरापंथ'। इसमें करीब ५० प्रतिभागियों ने भाग लिया।

साध्वी मधुस्मिता जी के सान्निध्य में सभी प्रतिभागियों को मेडल पहनाकर उनका अभिवादन किया गया। टीपीएफ के वेस्ट जोन सेक्रेटरी अंकुर लुणिया, टीपीएफ, औरंगाबाद की अध्यक्षा पूजा बागरेचा, सेक्रेटरी नेहा लुणिया, साइक्लोथॉन प्रभारी डॉ० विमलेश सेठिया, वाइस प्रेसिडेंट नलिन सुराणा, ज्वाइंट सेक्रेटरी अंकिता सेठिया, सकल जैन समाज, औरंगाबाद से राजेश मूथा, तेयुप अध्यक्ष विवेक बागरेचा सहित तेरापंथी सभा, तेममं एवं तेयुप के सदस्यगण उपस्थित रहे। टीम टीपीएफ ने साध्वी मधुस्मिता जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की।

चेन्नई

टीपीएफ, चेन्नई द्वारा संकल्प साइक्लोथॉन का आयोजन किया गया। यह आयोजन टीपीएफ के तत्त्वावधान में देश-विदेश की सभी शाखा परिषदों द्वारा किया गया। इस आयोजन में लगभग ७५ टीपीएफ एवं अन्य युवकों ने भाग लिया।

टीपीएफ अध्यक्ष प्रसन्न बोथरा के स्वागत भाषण से आयोजन का शुभारंभ हुआ। तत्पश्चात १५ मिनट तक योगिक क्रियाएँ करवाई गई। लगभग ७-८ सदस्यों की १० टीम बनाई गई। टीपीएफ के राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय पदाधिकारियों एवं अन्य गणमान्य सदस्यों द्वारा हरी झंडी दिखाकर साइक्लोथॉन की शुरुआत की गई।

समापन सत्र में भाग लेने वाले सभी सदस्यों को मेडल द्वारा सम्मान किया गया और वीडियो बनाने वाली टीम का भी पुरस्कार के द्वारा सम्मान किया गया। निर्णायक की भूमिका पवन बोहरा एवं सिद्धांत बोहरा ने निभाई। कई प्रतियोगियों ने टीपीएफ के इस आयोजन की सराहना की एवं अपने-अपने विचार रखे। चेन्नई शाखा अध्यक्ष राकेश खटेड़ ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

इस आयोजन के स्थान प्रदाता कोला सरस्वती विद्यालय के करेस्पॉन्डट ने टीपीएफ के इस प्रयास की सराहना की। योगा प्रशिक्षक हरीश भंडारी का सम्मान टीपीएफ सदस्य मुकेश बाफना द्वारा किया गया।

कार्यक्रम की सफलता में इस आयोजन के संयोजक सुनील बाफना की अहम् भूमिका रही। सह-संयोजक विवेक बोथरा ने पूरे कार्यक्रम के दौरान सबका उत्साह बढ़ाया एवं अंत में धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम में अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की उपस्थिति रही। टीपीएफ टीम, मंत्री सुधीर आंचलिया, कोषाध्यक्ष अखिल कोचर, दर्शन छल्लानी, कार्यकारिणी सदस्य प्रशांत आच्छा एवं अरिहंत नाहर का विशेष सहयोग रहा।

अहमदाबाद

टीपीएफ द्वारा 'टीपीएफ संकल्प साइक्लोथॉन' कार्यक्रम में १००० से अधिक सदस्यों ने बड़े उत्साह से भाग लिया। टीपीएफ ने स्वास्थ्य के बारे में जागरूकता लाने के लिए साइक्लोथॉन का आयोजन किया।

साइक्लोथॉन को टीपीएफ के राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज ओसवाल, राष्ट्रीय महासचिव विमल शाह, ट्रस्टी रायचंद लुनिया, वेस्ट जोन प्रेसिडेंट धनपत मालू, टीपीएफ, अहमदाबाद अध्यक्ष राकेश गुगलिया, टीपीएफ, अहमदाबाद सचिव अभिषेक मालू और साइक्लोथॉन के राष्ट्रीय संयोजक श्रेयांस बाफना ने झंडी दिखाकर रवाना किया।

टीपीएफ अध्यक्ष राकेश गुगलिया ने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि हम साइक्लोथॉन में लगभग ५०० लोगों के भाग लेने की उम्मीद कर रहे थे। शिक्षा और स्वास्थ्य के लिए हमारी पहल का समर्थन करने के कारण सहभागियों की संख्या १००० पार पहुँच गई। हम सहभागियों के उत्साह और भागीदारी के लिए आभारी हैं। हम पुलिस और अन्य अधिकारियों को उनके समर्थन और साइक्लोथॉन को सुचारु रूप से संचालित करने में सहयोग देने के लिए उनका आभार व्यक्त करते हैं।

यह साइक्लोथॉन साबरमती रिवरफ्रंट से शुरू हुआ और डफनाला, घेवर सर्किल, राजस्थान अस्पताल, तेरापंथ भवन, शाहीबाग पर पहुँची, वहाँ मुनि कुलदीप कुमार जी व मुनि मुकुलकुमार जी ने आशीर्वचन के साथ मंगलपाठ सुनवाया।

विजेताओं को मेडल और पुरस्कार प्रदान किए गए, साथ ही सभी सहभागियों को आकर्षक उपहार भी दिए गए।

राकेश गुगलिया ने आगामी कार्यक्रमों की जानकारी दी एवं अधिक-से-अधिक सदस्यों से टीपीएफ से जुड़ने की अपील की। इस अवसर पर टीपीएफ राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज ओसवाल, राष्ट्रीय महासचिव विमल शाह, वेस्ट जोन प्रेसिडेंट धनपत मालू, टीपीएफ अहमदाबाद सचिव अभिषेक मालू, संयोजक श्रेयांस बाफना आदि ने वक्तव्य दिया। इस अवसर पर टीपीएफ कैलेंडर का अनावरण संयोजक जागृत संकलेचा व टीपीएफ टीम व विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारियों द्वारा किया गया। इस साइक्लोथॉन में तेरापंथी सभा, तेयुप, तेममं और अणुव्रत समिति, अहमदाबाद का समर्थन प्राप्त हुआ।

नागपुर

तेरापंथ भवन से शुरु करके करीब ४ किलोमीटर साइक्लोथॉन का आयोजन किया गया। कुल ३० साइकिलिस्ट ने साइक्लोथॉन पूर्ण किया। कार्यक्रम की शुरुआत नवकार मंत्र से हुई। अध्यक्ष प्रियंक छाजेड़ ने शुरू में फिटनेस एवं शिक्षा का महत्त्व बताया। इस कार्यक्रम को नवीन सेठिया ने सुचारु रूप से आयोजित किया। मुख्य अतिथि अविज जीम के अविनाश वाघूले ने इसको हरी झंडी दिखाई।

सभी प्रतिभागियों ने कार्यक्रम का आनंद उठाया। साइकिल रैली के अंत में सभी प्रतिभागियों को मैडल प्रदान किए गए। कार्यक्रम को सफल बनाने में सभी संस्थाओं का संपूर्ण सहयोग रहा। टीपीएफ, नागपुर सभी वालंटियर्स, आयोजनकर्ता, सभी संस्थाओं का आभार ज्ञापन करती हूँ।

मुंबई

टीपीएफ, मुंबई ने केंद्र द्वारा निर्धारित दिशा अनुसार स्वस्थ व्यसन मुक्त जीवन व बच्चों को शिक्षित करने का संदेश जन-जन तक पहुँचाने के लिए साइक्लोथॉन रैली का आयोजन किया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के उच्चारण व राष्ट्रगान से हुई। कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए टीपीएफ, मुंबई अध्यक्ष राज सिंघवी ने अध्यक्षीय भाषण में आए सभी का स्वागत किया एवं रैली के बारे में जानकारी दी।

टीपीएफ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष मनीष कोठारी, मुंबई सभा के मंत्री दीपक डागलिया, अणुव्रत समिति की अध्यक्षा कंचन सोनी, दक्षिण मुंबई सभा अध्यक्ष गणपत डागलिया व उपस्थिति पदाधिकारीगण द्वारा झंडा दिखाकर रैली की शुरुआत हुई। रैली ने हॉर्निमैन सर्कल, चर्चगेट से शुरू होकर विभिन्न प्रसिद्ध स्मारक जैसे गेटवे ऑफ इंडिया, फ्लोरा फाउंटेन, चर्चगेट स्टेशन से गुजरते हुए लगभग ५:५ किलोमीटर का रास्ता तय किया जिसमें लगभग २५० प्रतिभागियों ने भाग लिया।

रैली के दौरार मुंबई पुलिस और ट्रैफिक पुलिस का पूरा सहयोग रहा। सभी साइक्लिस्ट को पदक से सम्मानित किया गया। इसके साथ कोमल कोठारी के साथ विशेष जुम्बा सत्र का आयोजन किया गया। डांस के साथ बॉडी स्ट्रेच करना व फिटनेस हासिल करने का नुस्खा सिखाया गया।

टीपीएफ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष मनीष कोठारी ने शिक्षा के क्षेत्र में टीपीएफ के विभिन्न आयामों की जानकारी दी। अणुव्रत समिति, मुंबई अध्यक्ष कंचन सोनी ने मार्गदर्शन में नशामुक्ति कार्यक्रम का आयोजन किया। एनएसएस यूनिट के कॉलेज स्टूडेंट्स द्वारा नशामुक्ति पर नुक्कड़ नाटक की प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम के संयोजक हर्षल जैन, काजल जैन, बबिता जैन ने कार्यक्रम की पूरी रूपरेखा बनाने व उसे पूरी करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

कार्यक्रम में दक्षिण मुंबई तेरापंथी सभा अध्यक्ष गणपत डागलिया, दिनेश धाकड़ एवं उनकी टीम, दक्षिण मुंबई तेयुप अध्यक्ष नितेश धाकड़, नीलेश धाकड़, उत्सव धाकड़, प्रवीण डागलिया, महिला मंडल, कन्या मंडल, किशोर मंडल के सभी पदाधिकारीगण व सदस्यों का सहयोग रहा। कुल मिलाकर ३०० से अधिक लोगों ने रैली में भाग लिया।

टीपीएफ राष्ट्रीय चेयरमैन के०एल० परमार, वेस्ट जोन उपाध्यक्ष जे०पी० गादिया, मंत्री राहुल डांगी, मुंबई मंत्री कमल मेहता, कोषाध्यक्ष कमलेश रांका, वरिष्ठ सदस्य बलवंत चोरड़िया सहित अनेक गणमान्यजनों की उपस्थिति रही।

डिजिटल मार्केटिंग कार्यक्रम का आयोजन

नागपुर।

वर्धमान नगर स्थित तेरापंथ भवन में डिजिटल मार्केटिंग के बारे में जागरूकता निर्माण करने हेतु संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें लगभग ६० लोगों ने अपनी सहभागिता दर्ज कराई। कार्यक्रम 'मास्टर द आर्ट ऑफ डिजिटल मार्केटिंग' की शुरुआत में सीए प्रियंक छाजेड़, अध्यक्ष टीपीएफ, नागपुर ने डिजिटल मार्केटिंग की उपयोगिता समझाई। इसके बाद एडिनिफाई डिजिटल मार्केटिंग के शीतांशु हरकुट एवं डिजिटल मार्केटिंग के कंसलटेंट आंचल छाजेड़ ने प्रशिक्षण दिया।

इस प्रशिक्षण के दौरान विविध पहलुओं के बारे में जानकारी दी, जिसमें ऑनलाइन बिजनेस कैसे शुरू करें, उसे कैसे बढ़ाएँ, लीड जनरेशन की कला को कैसे आत्मसात करें, मौजूदा ग्राहकों को किस तरीके से शामिल करें, इन सबका व्यापारी वर्ग में कैसे फायदा हो इसके बारे में विशेष जानकारी दी। साथ ही इस प्रशिक्षण के द्वारा महिलाएँ एवं आने वाली पीढ़ी के युवाओं को भी इसकी जानकारी से अपने व्यापार को बढ़ाने में फायदा होगा।

कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु नेकस्टेक इंडिया, नागपुर के हेमंत कुमार सौरभ कुमार बोथरा का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। कार्यक्रम का संचालन मधु डागा ने किया। आभार ज्ञापन सीए रोहित कोचर ने किया। तेरापंथी सभा, नागपुर के अध्यक्ष सुनील छाजेड़ के साथ अनेक गणमान्यजन उपस्थित थे। कार्यक्रम को सफल बनाने में एडवोकेट शिवाली पुगलिया, सीए विवेक पारख, डॉ० गौतम जोगड़, नवीन सेठिया, अरिहंत पटावरी, सीए सौरभ दफ्तरी तथा डॉ० सुमीता जोगड़ ने अथक परिश्रम किया।

टीपीएफ का गठन

झारखंड।

मुनि डॉ० ज्ञानेंद्र कुमार जी एवं डॉ० मुनि विमलेश कुमार जी, मुनि पदम कुमार जी, मुनि सुबोध कुमार जी के सान्निध्य में टीपीएफ का गठन रांची में झारखंड स्तर पर किया गया। जिसमें सर्वसम्मति से झारखंड के अध्यक्ष अरिहंत सिंघवी, सचिव विशाल दस्साणी, उपाध्यक्ष नवीन जैन, कोषाध्यक्ष मोहित जैन, सहसचिव केशु जैन तथा मीडिया प्रभारी संदीप पारख को चुना गया।

चुनाव प्रक्रिया में पूर्व क्षेत्र-१ के अध्यक्ष धर्मचंद धारीवा के साथ प्रवीण सिरोहिया, प्रवीण सुराणा तथा आलोक चोपड़ा उपस्थित थे। तेरापंथ समाज के सभी लोगों ने नई कार्यकारिणी को बधाई दी।

संत मिलन समारोह का आयोजन

सिटी लाइट, सूरत।

मुनि उदित कमार जी तेरापंथ भवन, सिटी लाइट में चातुर्मास संपन्न कर उपनगरों का प्रवास करते हुए वर्तमान में पुनः तेरापंथ भवन, सिटी लाइट में पधारे। बालोतरा का चातुर्मास संपन्न कर मुनि मोहजीत कुमार जी सूरत पधारे एवं कच्छ-भुज का चातुर्मास पूर्ण कर मुनि पुलकित कुमार जी भी सूरत पधारे हैं। भटार स्थित विवेकानंद गार्डन में तीनों संतों का आध्यात्मिक मिलन हुआ।

संत मिलन के अवसर पर परस्परता, प्रेम, स्नेह, विनय, वात्सल्य, प्रमोद एवं मैत्री भावना के दुर्लभ दृश्य निहार कर श्रावक समाज भावविभोर हुआ। तीनों संतों के साथ उनके सहवर्ती संत एवं विशाल श्रावक समुदाय उपस्थित था। मिलन के बाद विशाल रैली के साथ सभी नौ संतों ने तेरापंथ भवन, सिटीलाइट में मंगल प्रवेश किया, जहाँ पर ऐतिहासिक संत मिलन समारोह का आयोजन तेरापंथी सभा, सूरत के तत्त्वावधान में हुआ।

मुनि उदित कुमार जी ने कहा कि मुनि मोहजीत कुमार जी तेरापंथ धर्मसंघ के वरिष्ठ एवं सम्माननीय संत हैं। उनके साथ अतीत में अनेक बार रहने एवं मिलने का अवसर प्राप्त हुए हैं। उनके भीतर अनेक गुण और अनेक विशेषताएँ विद्यमान हैं। केवल २ महीने में ७२५ किलोमीटर की पदयात्रा कर वे सूरत पधारे हैं। मैं उनका स्वागत करते हुए अप्रतिम आनंद की अनुभूति कर रहा हूँ।

मुनि मोहजीत कुमार जी ने कहा कि मुनि उदित कुमार जी आचार्यश्री महाश्रमण जी के सहदीक्षित संत हैं। मर्मज्ञ हैं। कुशल प्रवचनकार हैं। प्रवाह को किस प्रकार से परिवर्तित करना उनकी बेजोड़ कला आपके पास है। शासन स्तंभ मंत्री मुनि सुमेरमल जी स्वामी की ज्ञान की विरासत आपको सहज संप्राप्त है। मेरी दीक्षा के बाद तुरंत आपसे मिलना हुआ था। तभी से हम दोनों बचपन के साथी हैं, मित्र हैं। मैं आपसे मिलकर अप्रतिम आह्लाद की अनुभूति कर रहा हूँ। मुनिश्री ने सुंदर गीत के द्वारा भी अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

मुनि पुलकित कुमार जी ने कहा कि सूरत में मंत्री मुनि सुमेरमल जी स्वामी एवं मुनि उदित कुमार जी के साथ चातुर्मास करने का सौभाग्य मुझे मिला था। मुनि उदित कुमार जी की गोद में मेरा बचपन बीता है। आप मेरे व्यक्तित्व के निर्माता संत हैं। आपके दर्शन कर मुझे अत्यंत प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है।

मुनि अनंत कुमार जी, मुनि भव्य कुमार जी, मुनि आदित्य कुमार जी, मुनि जयेश कुमार जी, मुनि रम्य कुमार जी एवं मुनि ज्योतिर्मय जी ने अपने-अपने भावों को प्रस्तुत किया।

तेरापंथी सभा, सूरत के अध्यक्ष नरपत कोचर ने स्वागत वक्तव्य देते हुए संत मिलन के अवसर को अद्वितीय व ऐतिहासिक बताया। आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष संजय सुराणा ने इसे प्रयागराज की उपमा दी। उधना सभा के उपाध्यक्ष मुकेश बाबेल ने मुनिश्री को मर्यादा महोत्सव उधना में करने की प्रार्थना की। अणुव्रत विश्व भारती गुजरात प्रभारी अर्जुन मेड़तवाल, तेममं व कन्या मंडल ने प्रासंगिक प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन तेरापंथी सभा के मंत्री अनुराग कोठारी ने किया।

शेषकाल में बही धर्म की गंगा

रायसिंहनगर।

समणी जयंतप्रज्ञा जी और समणी सन्मतिप्रज्ञा जी का रायसिंहनगर को लगभग २ महीने का प्रवास प्राप्त हुआ। समणीजी के प्रवास के दौरान प्रातः-सायं का प्रवचन हुए जिसमें तीर्थंकर अरिष्टनेमी का चरित्र, जैन धर्म के प्रभावक आचार्यों का जीवन आगम और तत्त्वज्ञान के साथ-साथ आगम विषयों पर प्रवचन हुए। इसके अतिरिक्त लोगस्स अनुष्ठान और २७ दिन तक उपसर्गहर स्तोत्र का अनुष्ठान भी सफल रहा।

तेरापंथ महिला मंडल द्वारा स्थानीय राजकीय बालिका विद्यालय में कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें समणीवृंद के मौलिक विचारों से प्राध्यापकों एवं विद्यार्थियों में नई प्रेरणा जागृत हुई।

तेयुप ने अभिनव सामायिक और पार्श्वनाथ जयंती के उपलक्ष्य में अभातेयुप द्वारा आयोजित तप का क्षेत्रीय स्तर पर अनुष्ठान आयोजित किया। ज्ञानशाला की वार्षिक परीक्षा आयोजित हुई, जिसमें सभी ज्ञानार्थियों को पारितोषिक प्रदान किए गए। वर्ष भर की ज्ञानशाला के प्रायोजक रहे स्थानीय तेरापंथी सभा के अध्यक्ष रविंद्र जैन, जिन्होंने ज्ञानशाला के लिए अनुदान राशि प्रदान की।

नववर्ष पर पारिवारिक क्विज प्रतियोगिता के माध्यम से सभी परिवारों ने जैन ज्ञान, तत्त्वज्ञान, इतिहास और तेरापंथ के विषय में प्रश्नों का समाधान देकर विभिन्न स्तरों पर विजेता बने।

सभी परिवारों को रविंद्र जैन ने पारितोषिक प्रदान किए। धर्मचंद बांठिया ने ज्ञानशाला के बच्चों को प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किया। समणीवृंद ने अपने प्रवास के दौरान सभी तेरापंथी व्यवसायिक प्रतिष्ठानों पर पगलिया कर मंगलपाठ किया।

जागृत युवा समृद्ध समाज कार्यक्रम संपन्न

साउथ हावड़ा।

मुनि जिनेश कुमार जी का दक्षिण हावड़ा के उपनगर आन्दुल रोड टुलिप गार्डन में राजेंद्र कुमार, संदीप कुमार, पीयूष कुमार मुणोत के निवास स्थान पर स्थानीय बृहद कोलकाता के श्रावक-श्राविकाओं द्वारा भावभीना स्वागत किया। इस अवसर पर टुलिप गार्डन के क्लब हाउस में 'जागृत युवा समृद्ध समाज' विषय पर धर्मसभा आयोजित हुई।

मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि युवा समाज की तस्वीर व तकदीर है। युवा समाज की रीढ़ व ऊर्जा है। युवा समाज का भविष्य है। युवा पराक्रम का प्रतीक है। जागृत युवा पुरुषार्थ के द्वारा असंभव प्रतीत होने वाले कार्य को भी संभव बना देता है। जागृत युवा ही समाज को समृद्धि की ओर ले जा सकता है। युवावस्था सृजन की अवस्था होती है। युवाओं को धर्मसंघ की सेवा में हमेशा तत्पर रहना चाहिए। भौतिक समृद्धि से भी अधिक महत्त्वपूर्ण है आध्यात्मिक समृद्धि। सभी को जागृत रहकर आध्यात्मिक समृद्धि प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिए।

इस अवसर पर मुनि परमानंद जी ने कहा कि जागृत युवा समाज का आधार होता है। जागृत युवा ही परिवार, समाज व देश को उत्थान की दिशा में अग्रसर कर सकता है। इस अवसर पर बाल मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत प्रस्तुत किया।

आंदुल रोड तेरापंथी परिवार की कन्याओं एवं महिलाओं ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। संदीप मुणोत ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। संचालन अमित ने व आभार ज्ञापन साउथ हावड़ा सभा के मंत्री बसंत पटावरी ने किया। कार्यक्रम में अच्छी संख्या में युवा एवं श्रद्धालुगण उपस्थित थे।

✦ *अनावेश, अनाग्रह और गहराई की स्थिति में होने वाला चिंतन सम्यक् होता है।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

नववर्ष के उपलक्ष्य में वृहद् मंगलपाठ

रांची।

मुनि डॉ० ज्ञानेंद्र कुमार जी, मुनि डॉ० विमलेश कुमार जी, मुनि पदम कुमार जी तथा मुनि सुबोध कुमार जी का दिगंबर जैन हरमु में प्रवास चल रहा है।

नववर्ष के उपलक्ष्य में अभिनव सामायिक समारोह हुआ, जिसमें समाज के लोगों ने एक साथ सामायिक का सेवा लाभ लिया। कार्यक्रम में महिला मंडल एवं कन्या मंडल के द्वारा गीतिका प्रस्तुत की गई एवं बच्चों ने जैन ज्ञानशाला के ऊपर नाटक मंचन तथा गीत प्रस्तुत किया।

मुनि डॉ० ज्ञानेंद्र कुमार जी ने बताया कि सूर्य की तरह तेजस्वी बनने का संकल्प करना चाहिए। संकल्प करें कि हम व्यक्तिगत कुरीतियों को आश्रय नहीं देंगे।

मुनि सुबोध कुमार जी ने उन्नत संकल्प को जोड़कर आंतरिक पवित्रता और ज्ञान को बढ़ाने की प्रेरणा दी। मुनि विमलेश कुमार जी ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

तेरापंथ सभा, झारखंड प्रभारी मदन चोरड़िया, बोकारो सभा अध्यक्ष शांतिलाल जैन, मंत्री प्रकाश कोठारी, महिला मंडल अध्यक्षा रेणु चोरड़िया, टाटानगर से अशोक बोथरा, भुवनेश्वर से दीपक सामसुखा, मधु गिडिया, अभातेयुप से सिद्धार्थ चोरड़िया, रांची से अमरचंद बैंगानी, विनोद बेगवानी, घेवरचंद नाहटा आदि ने अपने-अपने विचार व्यक्त किए। मंच का संचालन खुशबू दस्साणी एवं रश्मि सिंधी ने किया। कार्यक्रम में काफी संख्या में सकल समाज के लोगों की उपस्थिति थी।

शिक्षा ला सकती है जीवन में क्रांति

चंडीगढ़।

संसार की सबसे बड़ी ताकत शिक्षा है बिना शिक्षा के जीवन अधूरा और खालीपन जैसा है। आज के इस समकालीन विश्व और आधुनिक युग में शिक्षा बहुत आवश्यक है। शिक्षा एक ऐसी चीज है जिसके बिना सफलता असंभव के बारबर है। शिक्षा के ही कारण हमारे पसंदीदा कैरियर को पाने के कई प्रकार के अवसर भी हमें प्राप्त होते हैं। यह विचार मनीषी संत मुनि विनय कुमार जी 'आलोक' ने अणुव्रत भवन सभागार में व्यक्त किए।

मुनिश्री ने आगे कहा कि सही प्रकार से अपनी शिक्षा को पूर्ण करने के लिए हमें कुछ मुख्य चीजों पर ध्यान देना बहुत जरूरी है। हमारे जीवन में घर शिक्षा का प्रथम स्थान होता है और माता-पिता अपने बच्चों के प्रथम शिक्षक होते हैं। हर बच्चा अपनी माता से सबसे पहले बोलना सीखता है।

मुनिश्री ने कहा कि लोग थोड़ा-थोड़ा समझने लगे हैं कि शिक्षा क्यों जरूरी है और इससे उनको क्या फायदे हैं? अब ग्रामीण क्षेत्रों में भी लोग लड़का-लड़की में भेद-भाव किए बिना उन्हें स्कूल, कॉलेज भेज रहे हैं, जोकि देश के विकास के लिए एक अच्छा कदम है।

मंगलभावना समारोह का आयोजन

कोलाघाट, बंगाल।

मुनि जिनेश कुमार जी का मंगलभावना समारोह सकल जैन समाज के तत्त्वावधान में जैन भवन में आयोजित हुआ। जिसमें बंगाल सरकार के मंत्री विप्लवराज चौधरी व असीरदास संकेत क्लब के अध्यक्ष विशेष रूप से उपस्थित थे।

इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि जहाँ संतों का आगमन जनता के लिए हर्ष का विषय बनता है वहीं निर्गमन विश्व बंधुता का भाव लिए होता है। साधु के विहार को प्रशस्त माना गया है। मुनिश्री ने आगे कहा कि मंगल भावना समारोह प्रमोद भावना, ग्रहणशीलता, विनयशीलता का प्रतीक है। धर्म जोड़ने की कला सिखाता है। विनय के द्वारा जीवन को संवारें। हमारा जीवन कोमल मृदु व्यवहार संपन्न बने।

विप्लवराय चौधरी ने कहा कि मुनि जिनेश कुमार जी की वाणी मधुर है। हमें मानव बनने का संदेश देते रहें। कहीं ऐसा न हो कि हमारा जीवन पशु जैसा हो जाए। संतों का समागम अच्छा होता है। असीरदास ने कहा कि मारवाड़ी समाज में अच्छा उत्साह है। चंद्रकला बोथरा ने कविता की प्रस्तुति दी। जैन समाज की बहनों ने प्रवास की झलकियाँ शब्दों के माध्यम से प्रस्तुत की। अमराव देवी बोथरा ने गीत प्रस्तुत किया। पूजा ऋतु बोथरा ने संचालन व मंगल भावना गीत प्रस्तुत किया। इस अवसर पर कोलाघाट के अतिरिक्त कोलकाता आदि से भी लोग विशेष रूप से उपस्थित थे।

✦ *नम्रता एक ऐसा आधारभूत तत्त्व है, जिसके सहारे अध्यात्म का बहुमंजिला महल खड़ा किया जा सकता है।*
–आचार्यश्री महाश्रमण

तेयुप के विविध कार्यक्रमों के आयोजन

हमारी संस्कृति हमारे संस्कार कार्यशाला

राजाजीनगर।

साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में हमारी संस्कृति हमारे संस्कार कार्यशाला स्थानीय तेरापंथ भवन, राजाजीनगर में रात्रिकालीन सत्र में तेयुप द्वारा आयोजित की गई। कार्यशाला की शुरुआत सामूहिक नमस्कार महामंत्र से हुई। विजय गीत का संगान किशोर मंडल द्वारा किया गया। तेयुप अध्यक्ष अरविंद गन्ना ने स्वागत वक्तव्य दिया। सभा अध्यक्ष रोशनलाल कोठारी ने अपने विचार व्यक्त किए।

साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी ने कहा कि पाश्चात्य संस्कृति शांति के लिए भारत की ओर निहार रही है तो भारतीय संस्कृति का अंधानुकरण कर रही है। साध्वीश्री जी ने संस्कृति को विभिन्न भागों में बाँटते हुए कहा कि वेशभूषा, जीवनचर्या, शुद्ध खान-पान, बड़ों का आदर-सतकार सब कुछ बदल गया है। आवश्यकता है पुनः अपनी संस्कृति की ओर लौटें। साध्वी मेरुप्रभा जी ने संचालन करते हुए सुमधुर गीतिका प्रस्तुत की।

कार्यशाला में राजाजीनगर सभा अध्यक्ष रोशनलाल कोठारी एवं सभा परिवार, महिला मंडल अध्यक्षा चेतना वेदमूथा एवं महिला मंडल परिवार, तेयुप, राजाजीनगर संस्थापक अध्यक्ष सुनील बाफना, पूर्व अध्यक्ष चंद्रेश मांडोत, सतीश पोरवाड़, निवर्तमान अध्यक्ष मनोज मेहता, वर्तमान अध्यक्ष अरविंद गन्ना, प्रबंध मंडल, सदस्यगण, किशोर मंडल, कन्या मंडल एवं श्रावक-श्राविका समाज की अच्छी उपस्थिति रही। लगभग २४५ सदस्यों की उपस्थिति रही।

मंच संचालन तेयुप मंत्री कमलेश चोरड़िया ने किया एवं आभार ज्ञापन तेयुप संगठन मंत्री अजिंक्या चौधरी ने किया।

रक्तदान शिविर का आयोजन

साउथ हावड़ा।

मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव के अंतर्गत अभातेयुप की शाखा तेयुप द्वारा वार्ड नं० ४२ के सोभानालय मे मेगा रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। रक्तदान शिविर का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के संगान से हुआ। तेयुप उपाध्यक्ष ज्ञानमल लोढ़ा ने उपस्थित सभी का स्वागत-अभिनंदन किया।

उपाध्यक्ष ज्ञानमल लोढ़ा, सहमंत्री राहुल दुगड़, कोषाध्यक्ष विजयराज पगारिया, कार्यसमिति सदस्य सुनीता नाहटा, गौरव जैन, सुमित जैन, विशिष्ट आमंत्रित सदस्य मनीष कुमार बैद एवं अमित नाहटा के अथक परिश्रम से शिविर का सफल आयोजन हो पाया। रक्तदान में कुल ३५ यूनिट का संग्रह रहा। कोषाध्यक्ष विजयराज पगारिया ने लाइफ केयर ब्लड बैंक एवं सभी रक्तदाताओं का आभार व्यक्त किया।

सड़क सुरक्षा के नियम एवं उपयोगिता

राजाजीनगर।

अभातेयुप द्वारा निर्देशित तेरापंथ टॉस्क फोर्स की गतिविधियों के अंतर्गत तेयुप, राजाजीनगर एवं नेलमंगला देवनहल्ली एक्सप्रेसवे प्राइवेट लिमिटेड के संयुक्त तत्त्वावधान में सड़क सुरक्षा सप्ताह के तहत सोलुर सरकारी स्कूल में बच्चों को 'हाईवे की सड़क पर कैसे रहें सुरक्षित' इस बारे में प्रायोगिक रूप में जानकारी प्रदान की गई।

इसी के अंतर्गत सड़क कैसे क्रॉस करना है, हेलमेट की उपयोगिता, जीवन में रीसेट बटन नहीं है, इसलिए सुरक्षित एवं धीमी गति से गाड़ी चलाना, ध्यान से गाड़ी चलानी है तो बाद में नहीं पछताना पड़ेगा। फास्ट ड्राइव आखिरी ड्राइव हो सकती है, शराब पीकर गाड़ी चलाने के परिणाम, ट्रैफिक नियम एवं विभिन्न सड़क सुरक्षाओं से बच्चों को अवगत कराया ताकि वे अपने अभिभावकों को इसकी प्रेरणा दे सकें।

इस कार्यक्रम में तेयुप, राजाजीनगर से परामर्शक प्रवीण नाहर, चंद्रेश मांडोत, संजीव गन्ना, निवर्तमान अध्यक्ष मनोज मेहता एवं सतीश पोरवाड़, राजेश पोरवाड़, वर्तमान अध्यक्ष अरविंद गन्ना सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित थे।

आचार्य महाप्रज्ञ प्रज्ञा केंद्र सार-संभाल

राजाजीनगर।

तेयुप, राजाजीनगर द्वारा उद्घाटित आचार्य महाप्रज्ञ प्रज्ञा केंद्र-सोलुर, यह केंद्र हासन हाईवे के सोलुर गवर्नमेंट स्कूल में बनाया गया है। साधु-संतों की ठहरने की उचित व्यवस्था के लिए इसका समय-समय पर परिषद द्वारा सार-संभाल किया जाता रहा है।

अध्यक्ष अरविंद गन्ना ने आचार्य महाप्रज्ञ प्रज्ञा केंद्र एवं वहाँ के स्थानीय इंचार्ज से बातचीत करते हुए कहा कि किसी प्रकार की आवश्यकता हो तो उसे पूर्ण करने का आश्वासन दिया।

सार-संभाल हेतु तेयुप, राजाजीनगर के अभूतपूर्व अध्यक्ष सतीश पोरवाड़, वर्तमान अध्यक्ष अरविंद गन्ना, कमलेश चोरड़िया, राजेश देरासरिया, कमलेश गन्ना, सुनील मेहता एवं रनीत कोठारी की उपस्थिति रही।

अस्थि चिकित्सा शिविर का आयोजन

पूर्वांचल-कोलकाता।

एटीडीसी पूर्वांचल-कोलकाता के लिए यह गौरव का विषय है कि डॉ० धीरज मरोठी जैसे चिकित्सक हमसे जुड़े हुए हैं। डॉ० मरोठी के निर्देशन में एक बार फिर अस्थि चिकित्सा शिविर का आयोजन एटीडीसी पूर्वांचल-कोलकाता में किया गया। कुल १५ व्यक्तियों ने इस शिविर में चिकित्सा का लाभ लिया।

तेयुप, पूर्वांचल-कोलकाता डॉ० धीरज मरोठी को उनके द्वारा प्रदत्त निरंतर सहयोग के लिए भी विशेष साधुवाद प्रेषित करती है।

✦ *प्रेक्षाध्यान कहता है कि आत्मा को भूलो मत, चेतना के प्रति जागरूक रहो। हम ध्यान के द्वारा भीतर की दुनिया को देखने का प्रयास करें।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

अभिनव सामायिक कार्यक्रम का आयोजन

वाशी।

साध्वी पंकजश्री जी के सान्निध्य में मेवाड़ भवन, वाशी के प्रांगण में विविध मंत्रोच्चार के साथ बृहद मंगलपाठ एवं अभिनव सामायिक का आयोजन हुआ।

साध्वी पंकजश्री जी ने नमस्कार महामंत्र एवं सीमंधर स्वामी की स्तुति के साथ कार्यक्रम की शुरुआत की। साध्वी शारदाप्रभा जी ने भारतीय संस्कृति का सम्मान करते हुए अंग्रेजी नवीन वर्ष सभी के लिए मंगलकारी बने, यह कामना प्रेषित की। साध्वी पंकजश्री जी ने विविध मंत्रों का जाप करवाया व अभिनव सामायिक करवाई। साध्वी सम्यक्त्वयशा जी ने समय के मूल्य को लेकर प्रेरक कहानी सुनाई।

महाराष्ट्र प्रभारी निर्मला चंडालिया, अध्यक्ष महावीर सोनी, संयोजिका इंदू बड़ाला, अणुव्रत समिति, मुंबई मंत्री विनीता बाफना ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। मुंबई महिला मंडल, कन्या मंडल सुरक्षा योजना प्रभारी अनिता सिंयाल, उपासक सोहनलाल कोठारी सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं गणमान्यजन उपस्थित रहे।

वाशी तेरापंथ समाज के साथ कोपरखेरनै, नेरुल, ऐरोली व अनेक क्षेत्रों से श्रावक समाज उपस्थित रहा। कार्यक्रम का संचालन साध्वी शारदाप्रभा जी ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में तेयुप अध्यक्ष महावीर सोनी, तेयुप कोषाध्यक्ष विनोद बाफना, महिला मंडल संयोजिका इंदु बड़ाला, अनीता चपलोत, राकेश राठौड़, नितेश बाफना का सराहनीय सहयोग रहा।

पर्वत पाटिया।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप, पर्वत पाटिया द्वारा नववर्ष का प्रारंभ आध्यात्मिक रूप से उत्सव विश्व मैत्री का-अभिनव सामायिक से किया।

साध्वी लब्धिश्री जी के सान्निध्य में अभिनव सामायिक उत्सव विश्व मैत्री का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया।

साध्वी लब्धिश्री जी ने बताया कि अभातेयुप प्रतिवर्ष अभिनव सामायिक का आयोजन करवाती है तथा जैन धर्म में सामायिक का विशेष महत्त्व माना जाता है। सामायिक को समता की साधना और आत्मा को निर्मल करने का महत्त्वपूर्ण उपक्रम बताया गया है।

अभिनव सामायिक कार्यक्रम में सभा के वरिष्ठ सदस्य, सभा पदाधिकारीगण, मैनेजिंग ट्रस्टीगण, तेयुप पदाधिकारीगण, कार्यकारिणी सदस्य, तेयुप सदस्य, महिला मंडल, किशोर मंडल, कन्या मंडल एवं समस्त श्रावक समाज की उपस्थिति ने इस कार्यक्रम को अविस्मरणीय बना दिया। साध्वी लब्धिश्री जी के सान्निध्य में अभिनव सामायिक के दौरान तेरापंथ भवन पर लगभग २५५ सामायिक हुई।

तेयुप द्वारा सेवा कार्य

राजराजेश्वरी नगर।

तेयुप द्वारा शिव शक्ति चैरिटेबल होम्स (बौद्धिक रूप से विकलांगों के लिए घर) राजराजेश्वरी नगर में निवासित लोगों को राशन की सामग्री का वितरण किया गया। यह सेवा कार्य क्रिवा पितलिया के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में प्रकाशचंद विपुल, चेतन, अरिहंत पितलिया परिवार के सहयोग से किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ सामूहिक नमस्कार महामंत्र के संगान के साथ किया गया।

परिषद उपाध्यक्ष विकास छाजेड़ ने उपस्थित प्रायोजक परिवार सहित इस मौके पर उपस्थित सभी का स्वागत किया। इस अवसर पर परिषद उपाध्यक्ष विकास छाजेड़, मंत्री विपुल पितलिया आदि का सहयोग रहा। मंत्री विपुल पितलिया ने सभी युवकों तथा सहयोगी परिवार का आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन सेवा कार्य प्रभारी नरेश बांठिया ने किया।

● तेयुप द्वारा तारा ओल्ड ऐज होम में निवासित वृद्धजनों तथा उनकी देख-रेख करने वालों को राशन की सामग्री का वितरण किया गया। इस सेवा कार्य के प्रायोजक देवांश सुराणा के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में अनिल-संगीता सुराणा परिवार थे।

कार्यक्रम का शुभारंभ सामूहिक नमस्कार महामंत्र के संगान के साथ किया गया। परिषद अध्यक्ष कौशल लोढ़ा ने उपस्थित प्रायोजक परिवार सहित इस मौके पर मौजूद सभी सदस्यों का स्वागत किया। प्रायोजक परिवार से अनिल सुराणा ने सेवा कार्य की सराहना की। सेवा कार्य प्रभारी सुपार्श्व पटावरी ने सामग्री की बारे में जानकारी दी।

इस अवसर पर तेयुप मंत्री विपुल पितलिया, किशोर मंडल संयोजक विनीत भंसाली, तुषार बांठिया एवं अन्य सदस्यगणों की उपस्थिति रही। मंत्री विपुल पितलिया ने सभी युवकों का आभार ज्ञापन किया।

साधना का मौलिक और आधारभूत तत्त्व है सम्यक्त्व : आचार्यश्री महाश्रमण

केसुंबला, १६ जनवरी, २०२३

भव सागर तारक आचार्यश्री महाश्रमण जी प्रातः फलसूंड से लगभग १६ किलोमीटर का विहार कर केसुंबला पधारे। केसुंबला मुनि ऋषि कुमार जी एवं मुनि रत्नेश कुमार जी के संसारपक्षीय परिवार वालों से संबंधित है। केसुंबला का भी धर्मसंघ में सीर है।

युगप्रधान पूज्यप्रवर ने मंगल पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि सम्यक्त्व का बहुत महत्त्व है। सम्यक् दर्शन, सम्यक् दृष्टि, सम्यक्त्व। सम्यक्त्व संवर को एका मान लें, व्रत हो गया तो दुआ हो गया फिर अप्रमाद संवर आ गया तो तीया और लगा दो। फिर अकषाय संवर आ जाए तो चौका लगा दो। फिर अयोग संवर आ जाए तो पाँचा लगा दो। संवर की संख्या १२३४५ हो गई।

इन पाँच संवरों का कुल बारह हजार तीन सौ पैंतालीस होता है। एक कल्पना से समझने का प्रयास करें कि इस संख्या से एक को निकाल दें तो पीछे संख्या २३४५ रहेगी। एक सम्यक्त्व चला गया तो बहुत बड़ा भाग चला गया। सम्यक्त्व का बहुत बड़ा महत्त्व है। सम्यक्त्व नहीं है, तो फिर न व्रत है, न चारित्र, न अप्रमाद, और न अकषाय-अयोग की बात है। एक मौलिक और आधारभूत तत्त्व सम्यक्त्व है।

सम्यक्त्व के बिना सब ऊपर की चीजें हैं। सम्यक्त्व के बिना चारित्र मान्य नहीं है। अभव्य को सम्यक्त्व आ नहीं सकता और सम्यक्त्व के बिना मुक्ति नहीं। वही सत्य है, जो जिनों-वीतरागों, केवलियों ने प्रवेदित किया है। सत्य को मेरा समर्थ है। केवली कभी असत्य नहीं बोलते हैं।

आदमी का दृष्टिकोण सही रहे। यथार्थ पर रहे। दृष्टिकोण सही न होने से आस्था बल डोल सकता है। आस्था का इतना महत्त्व है कि आस्था के सहारे आदमी कठिनाइयों को झेलने को भी तैयार हो जाता है। यह एक प्रसंग से समझाया कि खाली समय में मनुष्य राम-राम बोलता है। एक बात से चिंतन बदल सकता है। चिंतन बदला तो दृष्टिकोण-आस्था ठीक हो सकती है।

हमारे जीवन में कई बार एक वाक्य या एक घटना-प्रसंग ऐसा आता है कि जीवन की दिशा और दशा बदल जाती है, अच्छी हो जाती है। हमारा सम्यक्त्व अच्छा रहे। ज्ञान-प्रवचन कई बार आदमी के दृष्टिकोण को एक सही दिशा की ओर ले जाने वाले हो सकते हैं। जीवन की अनंत काल की यात्रा में सम्यक्त्व का बड़ा महत्त्व होता है। हमारा सम्यक्त्व सुरक्षित रहे, पुष्ट रहे और क्षायिक सम्यक्त्व प्राप्त हो, यह काम्य है।

आज फलसूंड से चलकर केसुंबला आना हुआ। केसुंबला श्रद्धा का क्षेत्र इकरंगा है। दो बाल मुनि यहाँ से हैं। मूल प्रवासित क्षेत्र व जन्मभूमि गीदम है। पूज्यप्रवर ने दोनों मुनियों को प्रेरणाएँ प्रदान करवाई। केसुंबलावासियों को सद्भावना, नैतिकता व नशामुक्ति के संकल्प समझाकर स्वीकार करवाए।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि इस दुनिया में अनेक लोग ऐसे हो हैं, जो विद्वान हैं, जो योगी का जीवन जी रहे हैं। अनेक लोग ऐसे भी हो सकते हैं, जो गुणों के पुंज हैं, अपने आचार से भी अनेक लोग सुंदर हो सकते हैं। अनेक लोग ऐसे भी हैं, जिन्होंने अपने जीवन में प्रतिष्ठा अर्जित की है। पर वे लोग विरले होते हैं, जो परोपकार करने में अपनी शक्ति का नियोजन करते हैं।

मुख्य मुनि महावीर कुमार जी ने कहा कि जीवन में किसी महापुरुष की संगति का मिलना जीवन की एक अच्छी उपलब्धि एक अच्छा अवसर होता है। जो कंचनकामिनी के त्यागी सच्चे संत होते हैं उनका सान्निध्य मिले तो बड़े भाग्य की बात होती है। परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी एक महान भारतीय ऋषि परंपरा के संत हैं, जिनके भीतर अनुत्तर संयम की चेतना जागृत है।

मुनि रत्नेश कुमार जी, मुनि ऋषिकुमार जी ने अपनी संसारपक्षीय पैतृक भूमि पर अपने आराध्य की भावों से अभिवंदना की।

पूज्यप्रवर के स्वागत में प्रकाश बुरट, नरपतसिंह महेसा, मंगेखां ने गीत की प्रस्तुति दी। महिला मंडल, कन्या मंडल, ज्ञानशाला, किशोर मंडल ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

संतोषरूपी बादल लोभरूपी अग्नि को शांत कर देता है : आचार्यश्री महाश्रमण

सवाऊ पदमसिंह, २१ जनवरी, २०२३

तेरापंथ धर्मसंघ के गणमाली आचार्यश्री महाश्रमण जी प्रातः लगभग ८ किलोमीटर का विहार कर सवाऊ पदमसिंह पधारे। महामनीषी ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि भारतीय साहित्य और धर्म-साहित्य में कर्मवाद की बात आती है। कर्मवाद एक महत्त्वपूर्ण विषय है। इसका हृदय है—'जैसी करनी वैसी भरनी, सुख-दुःख स्वयं मिलेगा।

प्राणी जैसा करता है, वैसा भरता है। जैसा बोएगा वैसा पाएगा। शास्त्रों में आया है कि कौन-सा कार्य करने से कौन-सा कर्म बंधता है और उसका क्या फल मिलता है। 'कर भला-होत भला।' आत्मा ही कर्ता-विकर्ता है, सुख-दुःख की। दुष्प्रवृत्ति में लगी हुई आत्मा शत्रु है। सुप्रवृत्ति में लगी आत्मा मित्र बन जाती है।

जैन दर्शन में आठ कर्म बताए गए हैं। इन आठ कर्म के संदर्भ में हम आदमी के जीवन की व्याख्या कर सकते हैं। स्थिति देखकर कर्म के क्षयोपशम या उदय के बारे में जाना जा सकता है। सब कर्मों की अलग-अलग प्रवृत्तियाँ हैं, वो अलग-अलग प्रभाव बताते हैं।

जिसके मन में संतोष आ गया है, उसके तो घर में मानो कल्पवृक्ष हो गया है। कामधेनू उसके घर में है तो समझो हाथ में चिंतामणी रत्न आ गया है। नौ निधियाँ उसके सान्निध्य में रहती हैं। विश्व उसके बस में रहने लायक हो गया। स्वर्ग और मोक्ष की लक्ष्मी उसके लिए तैयार हैं। संतोषरूपी बादल लोभरूपी अग्नि को शांत कर देता है।

नाम, प्रतिष्ठा, मान-सम्मान आदि शुभ कर्म के उदय से मिलती है। हमें बुरे कर्मों से बचने का प्रयास करना चाहिए। हम जैसा व्यवहार करेंगे, वैसा ही हमारे साथ दूसरे भी करेंगे।

एक प्रसंग से समझाया कि मौके पर किसी का सहयोग करते हैं, तो उसका प्रतिफल मिल सकता है। परस्पर उपकार हो सकता है। हमें जीवन में सदाचार में रहना चाहिए, बुरे कार्य न करें तो बुरे कर्मों का बंध नहीं होगा।

पूज्यप्रवर ने सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति को समझाकर स्थानीय लोगों व विद्यार्थियों को नशामुक्त रहने के संकल्प स्वीकार करवाए।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि आचार्यप्रवर श्रुत पारंग हैं। आचार्यप्रवर ने ज्ञान के अथाह समंदर में निमंज्जन किया है। उन्होंने रत्नों को प्राप्त किया है और उन रत्नों को हमारे बीच बाँट रहे हैं। अच्छे जीवन जीने के लिए विद्यार्थी आचार्यप्रवर से कुछ नया सीख सकते हैं।

पूज्यप्रवर के स्वागत में स्थानीय उपसभा संयोजक विकास बालड़, उप-संयोजक बजरंग बालड़, तेरापंथ महिला मंडल, कन्या मंडल ने गीत द्वारा अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

शांति के लिए अहिंसा की शरण में आना...

(पृष्ठ १२ का शेष)

मतभेद, विचार भेद हो सकता है, पर मन भेद न हो। हमारे व्यवहार में एकता रहे। कल्याण में सहयोगी बने। किसी के कार्य में बाधा न डालें, जितना हो सके सहयोग करने का प्रयास करें। मैत्रीपूर्ण विचारधारा रखें, यह काम्य है।

सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति को समझाकर पूज्यप्रवर ने स्थानीय लोगों को संकल्प स्वीकार करवाए। स्कूल के विद्यार्थियों ने भी संकल्प स्वीकार करवाए।

पूज्यप्रवर के अभिवादन में गाँव के ठाकर किशोरसिंह, कानोड़ सरपंच प्रतिनिधि जोरावर सिंह, स्कूल के विद्यार्थियों ने गीत की प्रस्तुति दी। श्रावक जिनेश्वर तातेड़, उपासक नैनमल कोठारी, तातेड़ परिवार की महिलाओं ने गीत का संगान किया। राणीदेवी दामोदर तातेड़, विजयराज मेहता ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

व्यवस्था समिति द्वारा विद्यालय परिवार का सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
30 जनवरी - 5 फरवरी, 2023

✦ अपनी दुर्वृत्तियों से लड़ने की रणनीति बनाओ। डटकर लड़ो।
—आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्यप्रवर के मंगलपाठ से हुआ नवनिर्मित तेरापंथ भवन का उद्घाटन

निमित्त के योगदान से व्यक्ति का व्यक्तित्व निखर सकता है : आचार्यश्री महाश्रमण

फलसूंड, १८ जनवरी, २०२३

फलसूंड प्रवास के द्वितीय दिवस प्रातः मुख्यमुनि की संसारपक्षीय जन्मस्थली सवाईचंद कोचर के निवास से आचार्यश्री प्रस्थित हुए मुख्य चौक से प्रारंभ हुए जुलूस के साथ आचार्यश्री का नवनिर्मित तेरापंथ भवन में पदार्पण हुआ। चारों ओर गुंजायमान होते जयघोषों से ऐसा प्रतीत हो रहा था कि छत्तीस ही कौम आज शांतिदूत के स्वागत में पलक पांवड़े बिछाकर स्वागत कर रहे थे। इस अवसर पर आचार्यश्री के सान्निध्य में नवनिर्मित आचार्य महाप्रज्ञ मार्ग एवं अहिंसा सर्किल का उद्घाटन किया गया। महासभा द्वारा भवन परियोजना के तहत यह प्रथम तेरापंथ भवन फलसूंड में निर्मित हुआ है। आचार्यप्रवर के मंगलपाठ से भवन का उद्घाटन हुआ।

मध्यान में ६ किलोमीटर विहार कर वर्तमान के महावीर आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मुख्य प्रवचन में अमृत वर्षा करते हुए फरमाया कि श्रमण-धर्म बहुत बड़ी संपत्ति होती है। सम्यक्त्व और फिर श्रमण धर्म। दुनिया में अनेक संपदाएँ हो सकती हैं। भौतिक संपदा विभन्न रूपों में हो सकती है। पर श्रमण संपदा के सामने ये संपदाएँ तुच्छ लगती हैं।

श्रमण संपदा से इहलोक और परलोक दोनों अच्छे होते हैं, सुगति की प्राप्ति होती है। श्रमण अवस्था में आयुष्य का बंध हो तो स्वर्ग या मोक्ष का बंध होता है। श्रमण संपदा को प्राप्त करने के लिए बहुश्रुत की पर्युपासना करें। बहुश्रुत साधु से ज्ञान प्राप्त हो सकता है। हमारी दुनिया में उपादान तो महत्त्वपूर्ण है ही पर कहीं-कहीं निमित्त भी महत्त्वपूर्ण हो सकता है।

हमारे धर्मसंघ में अनेक साधु-साध्वियाँ हुए हैं। कितनों को निमित्त मिला है। निमित्त मिलने से भीतर संवेग की जागृति हो सकती है। आचार्य भिक्षु को भी निमित्त मिला था। कार्य के साथ कारण भी होता है। निमित्त का भी भाग्य होता है तेज को प्रस्फुटित होने में।

आज हम तेरापंथ भवन फलसूंड में प्रविष्ट हुए। तेरापंथ भवन में धार्मिक आध्यात्मिक गतिविधियाँ चलें। गुरुदेव तुलसी को पूज्य कालूगणी का आशीर्वाद मिला और वे कहाँ से कहाँ पहुँच गए। आचार्य महाप्रज्ञ जी भी छोटी उम्र में मुनि बन गए और विद्वान मुनि के रूप में सामने आए। निमित्त के योगदान से एक व्यक्तित्व को सामने आने का मौका मिल सकता है। पर साथ में उपादान भी चाहिए। उपादान मूल बीज है। उपयुक्त निमित्त से वह वृक्ष बन सकता है।

चाह को राह दिखाने वाला मिल सकता है। भीतर में उपादान है तो निमित्त मिलने से वह व्यक्तित्व निखर सकता है। साथ में पुण्य का भी योग होना चाहिए। फलसूंड से हमारे धर्मसंघ को मुख्य मुनि भी मिले हैं। वे बाल मुनि के रूप में आए थे। उनके परिवार व गाँव का योगदान रहा है। मुख्य मुनि के कारण फलसूंड का भी नाम हो गया है। मुख्य मुनि भी सेवा दे रहे हैं। काम भी करते हैं। मेरे सिवाय तीनों विशिष्ट पद मारवाड़ से ही हैं। इनके घर में जहाँ इनका जन्म हुआ था, वहाँ भी गए।

बहुश्रुत का निमित्त मिलता है, तो भीतर की तेजस्विता-आध्यात्मिकता के बीज को पल्लवित-पुष्पवित-फलित होने का फिर मौका मिल जाता है। मुख्य मुनि महावीर कुमार जी हमारे संघ में खूब विकास करते रहें। ये डॉक्टर भी बन गए हैं। मेरे पास तो कोई डिग्री नहीं है। साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी व साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी के पास तो स्नातकोत्तर डिग्री है। बिना डिग्री भी अनेक व्यक्ति ज्ञान-संपन्न बन सकते हैं। मुख्य मुनि महावीर कुमार जी का अध्ययन भी है और भी आगे बढ़ते रहें।

ज्ञान ताजा रहने से भाषण में भी ताजगी आ सकती है। ज्ञान भी दो प्रकार का होता है। एक तो भीतर प्रस्फुटित होता है। एक बाहरी ज्ञान है। एक कुएँ का पानी है, तो एक कुंड का पानी है। भीतर का स्रोत और खुले। कुछ नया मिलता रहे।

मुख्य मुनि-साध्वीवर्या स्वास्थ्य का भी ध्यान रखें। अवस्था का सेवा-साधना में उपयोग होता रहे। प्राणायाम आदि होता रहे। शरीर अनुकूल रहे। स्वयं की साधना के लिए प्रयास होता रहे। भीतर में साधना का विकास होता रहे। व्यवस्था-कार्य में कुशलता का विकास होता रहे। कार्य करने का अनुभव बढ़े। ज्ञान, स्वाध्याय, साधना और व्यवस्था अनुशासन में कार्य कौशल का विकास होता रहे। अवसर का उचित लाभ उठाते रहें। चित्त में समाधि-शांति रहे। दोनों उभरते हुए हैं। परिश्रम करते रहें तो उसका कुछ फल मिलता है। श्रम करो, सफल बनो। कोचर परिवार भी बड़ा है। सवाईचंदजी की पोती, दोहित्री भी मुमुक्षु है। सुरेंद्र कोचर को भी मुमुक्षु रूप में साधना करने का आदेश फरमाया। रुचिका कोचर को भी मुमुक्षु साधना करने की स्वीकृति प्रदान करवाई।

साध्वीप्रमुखाश्री ने कहा कि आचार्यप्रवर परिव्रजन करते हुए नगरों, शहरों, गाँवों में विहरण कर रहे हैं। गाँवों में यथार्थता का हम दर्शन करते हैं। गाँवों से हमें बहुत कुछ उपलब्ध हो सकता है। एक छोटा सा बच्चा अपने गाँव को छोड़कर त्याग के मार्ग पर चल पड़ा। पूज्यप्रवर ने इनको प्रतिष्ठित कर दिया है। जिस पर गुरु की दृष्टि पड़ जाती है, वह कुछ-न-कुछ हो जाता है।

मुख्य मुनिश्री ने कहा कि पूज्यप्रवर ने लंबी-लंबी यात्राएँ की हैं। आज आपश्री का फलसूंड पधारना हुआ है। आप कठोर श्रमी महापुरुष हैं। जहाँ-जहाँ जाते हैं—छत्तीस कौम प्रवचन का लाभ लेती हैं। फलसूंड के लोगों में भक्ति है, यहाँ के लोग सरल हैं। गुरुदेव का धोरों की धरती पर पधारना समंदर की तरह है।

साध्वीवर्या जी ने कहा कि फलसूंड की धरती धन्यता का अनुभव कर रही है कि आज पूज्यप्रवर मुख्य मुनि को लेकर पधारे हैं। ये धरती महिमा मंडित हो गई है। पूज्यप्रवर की दृष्टि पड़ी और एक छोटा-सा गाँव गौरवान्वित हो गया। गुरु का अपार स्नेह जिस पर पड़ जाता है, वो संघ की महान विभूति बन जाता है।

पूज्यप्रवर के स्वागत में तारातर मठ के महंत स्वामीजी, सभा-तेयुप संयुक्त, ज्ञानशाला, महिला मंडल, कन्या मंडल द्वारा गीत की प्रस्तुति दी गई। मुमुक्षु प्रेक्षा कोचर ने गीत प्रस्तुत किया। संतोष तातेड़ एवं हीरालाल मालू ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम में आचार्यश्री ने महती कृपा कर फलसूंड के सुरेंद्र कोचर एवं रुचिका कोचर को मुमुक्षु साधना करने की स्वीकृति प्रदान की। ज्ञातव्य है कि दोनों ही मुख्यमुनि महावीर कुमार जी के संसारपक्षीय परिवार से संबद्ध हैं।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

शांति के लिए अहिंसा की शरण में आना अपेक्षित : आचार्यश्री महाश्रमण

कानोड़, २२ जनवरी, २०२३

मर्यादा पुरुष आचार्यश्री महाश्रमण जी प्रातः लगभग १४ किलोमीटर का विहार कर धवल सेना के साथ कानोड़ पधारे। परमपूज्यश्री ने मंगल पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि दुनिया में अहिंसा और मैत्री की अपनी शक्ति होती है। हिंसा का अपना तांडव हो सकता है, परंतु शांति के लिए अहिंसा की शरण में आना अपेक्षित होता है।

हिंसा का मार्ग दुःख का मार्ग है। हिंसा दुखों की जननी है। अहिंसा धर्म है, शांति प्रदाता तत्त्व है। आदमी जीवन में हिंसा से बचने का यथासंभव प्रयास करे। सबके प्रति मैत्री का भाव रखे। बैर से बैर बढ़ता है। रक्त से सने कपड़े को रक्त से नहीं धोया जा सकता। बैर को मैत्री से साफ किया जा सकता है। किसी के साथ बैर-विरोध हो तो खमतखामणा कर लें।

एक प्रसंग से समझाया कि ईर्ष्या को मैत्री से जीतें तो ईर्ष्या करने वाले का मन बदल सकते हैं। मन में दूसरे के प्रति बड़प्पन रखें। पेड़ चोट खाकर भी फल देता है। बड़ों में उदारता रहे। रस्सी को दोनों ओर से खींचने से वह टूट सकती है। दोनों तरफ ढील छोड़ दो तो कोई गिरता नहीं है। मैत्री और उदारता से अनेक झगड़ों से बचा जा सकता है।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**